गुरु के चरणों में प्रार्थना

दीनों के बन्धु, निर्बलों के स्वामी ! केवल तुम्हीही आशा, आशा के केन्द्र और आशा के कारण हो। संसार में हर चारों ओर उदासी छाई हुई है। तुम्हारे ही पवित्र चरणों का आसरा है जो चित्त को ढाढस बंधाता रहता है। जिधर देखिये निरशा का घटा टोप अन्धकार छाया हुआ है। केवल तुम्हारे ही पुनीत चरण कमलों का ध्यान मलीन मन को प्रकाश, नेत्रों को तेज और आनन्द प्रदान करता है। तुम्हारी ही एक आस जीवन के सर्व सुखों की हेतु है, कारण है।

जब संसार हमको बुरा कहता था उसकी अपेक्षा से हम भले थे क्योंकि उस समय भले और बुरे का हमको अनुभव न था अब कुछ २ विवेक हुआ और समझ में अगया कि यह मन बुरा है और सब बुराइयों का मूल है। अब हमारी दृष्टि अपनी अन्तरी त्रुटियों की ओर रहती है। तुम दया करो जिससे यह दृष्टि बिल्कुल ही बदल जाय और तुम्हारे ध्यान के अतिरिक्त और किसी प्रकार का विचार चित्त में न रहे। केवल इसी एक बात में हमारी सच्ची है भलाई और तुम बिन न कोई अपना संगी है न सहाई !

जिसको देखा अपने स्वारथ का पाया। "ग़रज़ की मोहब्बत ग़रज़ की मदारा, अदावत निहां, दोस्ती आशकारा"। यह दुनियाँ का सलूक असाध्य रोग है। इससे रक्षा करो। अपने चरणों में लगाओ। बारम्बार यही प्रार्थना है। अब जाकर इसका विवेक हुआ। अज्ञान में इसकी समझ नहीं थी। अब यदि आपने अपनी करुणा से नेत्र खोल दिये हैं तो ऐसी दया हो कि यह मन आपके अतिरिक्त और किसी के बसने का स्थान न बनने पावे न किसी अन्य का आपके अतिरिक्त भाव ही चित्त में आवे।

लोग कहते हैं कि युवकों को हज़ारों प्रकार के बन्धन फंसाने के फैले हुए हैं पर हम तो इस बुढ़ापे में भी देख रहे हैं कि बूढ़ों को

सताने और उनके बन्धन के अनेक जाल और भी अधिक फैले हुए हैं। तृष्णा सूक्ष्म रूप में और भी अधिक दुखदाई होती है। चाहे सब संग छोड़ जांय पर यह व्यर्थ में ही उनके झूंठे मोह का दम भरने को विवश करती है। कुछ बनता नहीं सब ही बिगड़ रहा है। फिर भी भ्रम वश आपत्ति विपत्ति भोग रहे हैं।

तुम ही ऐसे दीन हीनों को मुक्त करने के हेतु इस संसार में प्रगट हुए हो। हम जैसा दुखी और अबल कौन होगा। हम पर दया दृष्टि हो। हर प्रकार से अपना बना लो। आपके सिवाय हमारा चित्त और किसी ओर चलायमान न हो। यदि यह दशा हमको प्रदान होजाय तो अभी तत्काल हमारा कल्याण होजाय। न हमको मुक्ति की इच्छा है और न मान बड़ाई की तृष्णा है। जीवन के दिन पूरे होने को आरहे हैं।

अब तो ऐसा हो कि सोते जागते, उठते बैठते नितांत आपके चरण कमलों का ध्यान रहे। केवल यह ही एक कामना और यही एक लालसा है। इसके सिवाय और कुछ भी नहीं। परम पुरुष राधास्वामी दाता दयाल के पवित्र और पुनीत चरणों में बारम्बार नमस्कार है।

—विनती—

चरण कमल की धूर बख़्शो चरण कमल की धूर। टेक।

१—यह धूरी जीवन की मूरी करे रोग सब दूर।

मांज मांज मन मुकर का दरपन देखूं सत पद नूर। बख्शो०।

२—आँख लगाऊँ अञ्जन निर्मल मिटे तिमिर भरपूर।

दिव्य दृष्टि की ज्योति अनुपम, ज्ञान ध्यान का सूर। बख्शो०।

२—रूप अनूप देख छवि अद्‌भुत, सुरत भई मख़मूर।

राधास्वामी चरन शरन बलिहारी निरखूं रूप हजूर। बख्शो।

हजूर का नादिया बैज़

नन्दू

सम्पादकीयः—

परम संत कबीर सा० ने सत्य कहा है कि संसार को प्रसन्न करना महा कठिन है। सत्य का कोई विश्वास नहीं करता और झूठ कहा नहीं जाता। सम्भव है सत्य और झूठ को मिला कर दिखाया जाय। पर जी नहीं चाहता कि इस रीति से काम किया जाय इसलिये हमने यह ढङ्ग पसन्द कर रक्खा है कि जो बात हो वह साफ़ २ और सीधी साधी हो। लगाव लपेट का काम न रहे। फ़िलसफ़ा रहस्य और गूढ़ विषय को बालकों की सीधी साधी बोल चाल में समझाने का प्रयत्न करते हैं जिससे लोग भली-भाँति समझ सकें। जिनको समझ है वह समझते हैं परन्तु जिनकी बुद्धि और विवेक शक्ति अभी उभरी नहीं है वह झिल्ला उठते हैं क्योंकि वह हमारे आशय को ज्यों का त्यों ग्रहण नहीं कर सकते।

यह कलियुग है। इसमें जड़ ने चैतन्य को ढक रक्खा है और मनुष्य नितान्त जीव कोटि में आगया है। इसकी अन्तिम अवस्था भी आती है। क्योंकि सृष्टि में जिसका आदि है उसका अन्त भी है एक दशा सदैव नहीं रहती। और न कभी रहेगी। जब मनुष्य एक दम जड़वत् होकर अपनी चिन्तन शक्ति को खो बैठता है तो यह भी आवश्यक है कि इस अवस्था का अन्त होकर उस में चिंतन शक्ति जाग उठे। और वह अपने आपको पहिचाने। यह कलियुग का समय जड़ता की उन्नति का युग है। और इसी के पेट से सत युग पैदा होगा। जिसमें मनुष्य जीव कोटि से निकलकर देव कोटि, ईश्वर कोटि, ब्रह्म कोटि और सन्त कोटि में आयेगा। यह अवस्था धीरे २ प्राप्त होगी। परम पुरुष राधास्वामी दयाल ने जीवों पर दया करके इसे आरम्भ कर दिया है। इसलिये यह कब मुमकिन है कि आत्म ज्ञान के गूढ़ रहस्य जो अब तक गुप्त रीति से छिपे चले आरहे हैं अब भी उसी तरह छिपे ही रहें। बल्कि अब उनको प्रगट होने का समय आगया है।

कलियुग में स्वामी दया विचारी । प्रगट करके शब्द पुकारी ॥
जीव काज स्वामी जग में आये । भव सागर से पार लगाये ।
तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा । सत्त नाम सत गुरु गति चीन्हा ।

इस अङ्क का नाम शब्द सार है । यह शिव का बारहवाँ अङ्क है । इस नम्बर से अंक का पहिला साल खत्म होगया । दूसरे साल का पहिला अङ्क'शाही पति परायण'नाविल होगा जो छप रहा है । और जल्द ही पाठकों को भेंट किया जायगा । शब्द सार में मनोहर २ रसीले शब्द आये हैं जिनके गाने से आनन्द मिलेगा । गाना प्रकृति का नियम है सृष्टि का कोई कार्य गाने से खाली नहीं है । यही कारण है कि राग और गाने का चाव हर एक को है और मनुष्य के जीवन पर गाने का विशेष प्रभाव भी पड़ता है । अच्छा गाना वायु मण्डल को बदल डालता है सन्नाटा छा जाता है ।

गाना भांति २ का होता है । वीररस, शृङ्गाररस, वैरागरस करुणारस आदि २ । नौ प्रकार के गानों को लग-भग सब ही जानते हैं । इस देश के ऋषि तो गानों पर मुग्ध थे । वेदों से लेकर पुराणों तक का साहित्य पद्य में ही वर्णन किया गया है सब ही ने गाने को जीवन का आवश्यक अङ्ग माना है । संतों और फक़ीरों ने गानविद्या को आत्मिक आहार का नाम दिया है । इसे प्रत्येक उत्साह की भावना को उत्तेजित करने का एक मात्र साधन माना है । यह चित्तको आकर्षित करता है । और शांतिदायक है ।

आशा है शब्द सार के पाठ से पाठक गण लाभ उठायेंगे । यदि उनकी इच्छा हुई तो समय २ पर इस प्रकार के और भी शब्द संग्रह करके भेंट किये जायेंगे । दाता दयाल दया करें जो इनका अवलोकन करें वह सार को ग्रहण करने के योग्य हो सकें । राधास्वामी ।

नन्दू भाई

ध्यान देने योग्य व्यवस्थापक की विनय-पत्रिका

(१) इस तरङ्ग नं० १२ के साथ "शिव मासिक" अपना प्रथम वर्ष समाप्त कर रहा है। जिन २ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है यदि हमारे प्रेमी पाठक दो दो नये ग्राहक बना देते तो काम सरल हो जाता। आशा है आगे इसका ध्यान रखकर हमारे उत्साह को बढ़ायेंगे।

(२) जिन सज्जनों ने अभी तक अपना वार्षिक चन्दा नहीं भेजा है कृपया वह मनीआर्डर द्वारा भेज दें। कुछ प्रेमी पाठकों को तो पत्र द्वारा भी इसकी याद दहानी कराई गई है पर खेद है कि एक कार्ड लिखने का भी कष्ट नहीं किया और हमारी सेवा बराबर जारी है। अब सविनय प्रार्थना है कि अपने विचार से आगामी वर्ष के लिये हमको सूचित करदें जिससे हम वी० पी० करने को अपने नियम के विरुद्ध बाध्य न हों।

(३) जिन महानुभावों ने हमारी आर्थिक सहायता की है हम उनके हृदय से कृतज्ञ हैं। और भले की कामना करते हैं। इस अङ्क को सहायता देने वाले सज्जनों के नाम धन्यवाद सहित हम भूमिका में दे रहे हैं जिससे वे हमारे सब प्रेमी पाठकों के आशीर्वाद के पात्र होते हुये यश और कीर्ति के भागी बनें।

(४) आगामी वर्ष २ का प्रथम अङ्क 'शाही पति परायण' पाठकों को भेंट होगा। वह एक ऐतिहासिक उपन्यास ही नहीं है बल्कि दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के हृदय के उद्‌गारों का एक प्रकार से अनुपम भंडार है। व्यवहार, प्रतिभास और आत्मिक अथवा शरीर, मन और आत्मा के ज्ञान की ऐसी मनोहर सरल, विचित्र और अद्‌भुत रूप में विवेचना की है जिससे एक सर्व साधारण मनुष्य भी अपने लोक परलोक और जीवन को सार्थक बना सकता है। हम अधिक क्या कहें उसके अवलोकन मात्र से ही भली भांति ज्ञात हो सकेगा।

चतुर चितेरे सोच मन जो तू है चित्राकार।
चित्र खेंच ऐसा अगम नहीं गुण कला विसार॥

निःसंदेह ऐसी ही कला का अनुपम चित्र है। शौक़ से इन्तज़ार करें।

(५) पिछले अङ्क ११ में हमने "महा शक्ति दाता" के नोटिस भेजे हैं और फिर भी हजूर दाता दयाल के शिवरात्रि जन्मोत्सव के उपलक्ष में याददहानी कराते हैं कि इस सुअवसर से लाभ उठावें। कुछ महानुभावों ने तो इस पर ध्यान देकर आगामी वर्ष का चन्दा भेजकर ४० दिन की उपरोक्त दवा को मँगाना भी शुरू कर दिया है। मालिक ने बहुत से असाध्य रोग जैसे तपैदिक़, दमा, प्रमेह, स्त्रियों के प्रदर रोग में हमको सफलता प्रदान की है उसमें हमसे मुफ्त दवा व सम्मति लेकर लाभ उठावें उत्तर के लिये जवाबी कार्ड या लिफ़ाफ़ा ज़रूरी है दवा को रजिष्ट्री खर्च ।।)।

(६) प्रेमी भाई श्री कल्लिया मल्लिया जी, निवासी पोस्ट रेगौड ताल्लुका इन्दोल ज़िला मेदक राज हैदराबाद दखन ने श्रीमान भईय्या जी नन्दूसिंह जी महाराज को आगामी वर्ष में 'राधास्वामी जोग' के प्रकाशन को ५००) रु० भेंट किये हैं जो हार्दिक धन्यवाद सहित हमको प्राप्त हुये हैं। मालिक से उनके मनोरथों में सिद्धि की प्रार्थना करते हैं। यदि इसी प्रकार प्रेमी जिज्ञासुजनों की सहायता का हाथ बढ़ा रहा तो हम दातादयाल के बड़े २ ग्रन्थ, गीता, रामायण आदि भी भेंट कर सकेंगे और शब्दसार भाग २ भी भेंट हो सकेगा।

(७) कृपया उत्तर के लिये जवाबी कार्ड व ग्राहक नं० ज़रूरी है।

भवदीय—
लल्ला भईया मैनेजर 'शिव'
पोस्ट दयाल नगर जि० अलीगढ़

विषय सूची

	नं०		पृष्ठ
म	१—मङ्गलम् गुरु देव मूरति	....	२
	२—मङ्गलम् गुरुदेव मूरति	....	३
	१०—मैं हूँ दास तुम्हारा प्रभु जी	....	८
	४३—मैं पइयाँ परूँ	....	२६
	५१—मैं हूँ सेवक सच्चा	....	३३
	६२—मैं पतित ठहरा तभी तू पतित पावन बना	....	४०
	७६—मेरे घट की क्यारी हरी रहे	....	५४
	७१—मैंना मैंनारे मैंना	....	४६
	८१—मैं तो होली खेलन को ठाड़ी	....	५७
	९२—मैं हूँ भोला भाला बालक	....	६४
ब	२—बन्दनम अद्वैत द्वैत	....	३
	५—बाँह गहे की लाज सतगुरु	....	४
द	४—दाता ज्ञाता पितु अरु माता	....	४
	१४—दयामय क्यों ऐती देर लगाई	....	१०
	१७—दीन बन्धु कृपालु स्वामी	....	१२
	२४—दयामय दीन दुख भंजन	....	१६

(ञ)

३५--दया दृष्टि कीजै २४

४६--दुखियों का तू सहारा स्वामी ३१

र ६--राधास्वामी चरण कमल पर ४

८३--राधास्वामी नाम की बलिहारी ५६

६४--राधास्वामी मत वह क्या समझें ४३

८२--राधास्वामी नाम जो गावै सोई तरै ५७

६६--राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ४४

१०३--रंगदे मन की साड़ी रँगीले ७०

८१--रंगदे चुनर मोरी रंगरेजवा ५७

७८--राजों के महाराज तुम मेरे सतगुरु स्वामी ५५

ग ६--गुरु परम दीन दयाल प्रगटे ६

४१--गुरु गति अगम अलौकिक २८

५६--गुरुसंग नेह लगावरी मेरी सुरत सयानी ३६

६३--गुरु नाम में हिया जिया उमगाऊँ ४२

९१--गुरुदाता मौज करो आज नई ६४

९०--गुरु प्यारे दरश दो मोहि अपना ६३

६७--गुरु गहकर हाथ सँभालो मुझे ४५

८९--गुरुदाता चरन की धूलि मिले ६३

स ११--सर्व समरथ साइयाँ तुम ८

१८--सिरजन हारा, पालन हारा १२

३१--सब की आदि अन्त तू दाता २१

३३--सहज में भव पार करदो २३

	४२—स्वामी प्रीतम दाता दानी	....	२६
	४५—साँईं भवनिधि के पार लगा	....	३०
	५०—साँईं मेरी नैया लगादो पार	....	३२
	७५—सइयाँ बेदर्दी रे	....	५४
	१०६—सन्तो सहज समाधि भली	....	७३
	७३—सजनवा जाहि छिप कौनी ओर	....	५२
	१०८—सजनी चलो बाग में पीके	....	७२
च	६—चरन कमल की धूर बख़शो	....	७
	१३—चरन कमल में सीस झुकाऊँ	....	६
	४०—चरण शरण की वन्दना नित	....	२८
	४८—चरन शरन की छाया दीजे	....	३२
	५२—चमका घट भक्ति का तारा	....	३४
श	८—शरना गत की लाज स्वामी	....	७
त	१२—तेरे चरन की दासी हूँ	....	६
	२१—तुम आये इस जगत में	....	१२
	२३—तेरी स्तुति क्या करूँ	....	१५
	२५—तेरी गति मति कौन लखे	....	१६
	२६—तू अविनासी अजर अमर	....	१७
	२७—तू जगदीश जगत का कर्त्ता	....	१८
	४४—तुम मेरे प्रान अधारे दाता	....	३०
	४७—तुम ही प्रान अधारे सतगुरु	....	३१

५४—तेरी दया हो मुझ पर मेरे कृपाल दाता ३५
५८—तेरे घट में विमल बहार बाहर ना आरे ३७
६०—तेरी दया का दृढ़ विश्वास हुआ ३८
८५—तेरी स्तुति हित चित से गाऊँ ६०
६४—तुझे कभी न बिसारूँ रे गुरुदाता ६५
६६—तारने वाले ने तारा ६८
७४—तुम्हें चिन्ता नहीं है क्या मेरी ५३

ध १५—धीर भीर गंभीर सतगुरु ११
२२—धन धन भव भंजन जनमन १५
२८—धन्य धन्य सतगुर दयाला १६
२६—धन रूप भूप अनूप निर्गुन २०
३४—धन धन जग त्राता २३

ज १६—जग का स्वामी जग का दाता ११
४६—जल्दी बाँह गहो पिता प्यारे ३२
५६—जल कैसे भरूं औंधी गगरी ३८
७२—जिस रहनी में मालिक राज़ी ५१

अ १६—आंखों का तारा सब का सहारा १३
३०—अज्ञान वश नहीं तुमहिं जाना २१
६५—आया तेरी शरण में रख लाज प्यारे ४४
६६—आस कर गुरु की दया की ६६
६३—आस अब किसकी करूं ६५

८७—आपके अर्पण है यह मेरा नहीं तन आपका ६२

न २०—नाम दान दे अपना कीजे १४
३८—नाम दान प्रदान कीजे २६
५३—नाम सुमिर प्यारे भाई नाम में भलाई ३५
५५—नर जन्म न बारम्बार कछु समझ ३६
८४—नमो सतगुरम ६०
७०—निज दरश दिखादो अपना पिया ४८

प ३२—प्राणों का है प्राण पिता तू २२
६८—पहुंचादो प्रेम नगरिया जी ४६

ह ३६—हाथ जोड़ नवाय मस्तक २५
५७—है सुफल नर जन्म उसका ३७
६५—हम तो निसदिन गुरु रङ्ग राते ६६
८६—हमें भी दे तार लाखों तारे ६१
७६—होरी ब्रज में कैसी मचोरी ५६

भ ३७—भक्तन के लाज काज २६
१००—भव सागर अगम अथाह से पार ६८

क ३६—कोटि स्तुति बन्दना करूं २७
८८—करूं बीनती दोऊ कर जोरी ६३
१०७—कांटा लगा विरह का हिय में ७२

ल ६१—लेता हूं नाम तेरा दाता दयाल है तू ४०

उ १०२—उठ जाग सवेरा री ६६

ड १०१--डंके की जोट सुनी घट में ६६
घ ६८--घट का घर सूना पड़ा है ६७
६६—घट का पट खोल दिखादो पीया ४७
ढ ६७—ढूंढ मुझको अपने मन में ६६
ख ७७--खेलो खेलो ऋतु आई वसंत ५५

बाँह गहो मेरी नाथ संभारो।
जो मैं दीन अधीन दयानिधि; मेरी ओर निहारो।
तुम बिन और न दूजा जानूँ, मेरा करो निस्तारो ॥१॥
दीन दयाल परम हितकारी, दाता नाम तिहारो।
राखो लाज काज करो स्वामी, अबकी बेर उबारो ॥२॥
धर्म न भक्ति भाव नहिं साधन, नहिं कछु ज्ञान बिचारो।
पतित कुटिल क्रोधी अति कामी, मन में भरा हंकारो ॥३॥
माया लोभ मोह बहु तृष्णा, मेरा जन्म बिगारो।
केहि विधि बिनती करूँ प्रभु तुम्हरी, बिगड़ी सकल सुधारो॥४॥
तुम समरथ तुम हो दुख भंजन, तुम सबके रखवारो।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, आज अधम को तारो॥५॥

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवोमहेश्वरः ।
गुरु साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः ॥

शिव

वर्ष १ | फरवरी १६५६ | तरंग १२

❀ प्रार्थना ❀

आया गुरु दरबार में मेरे सतगुर सांई।
१-बल पौरुष से हीन भया हूँ बुद्धि का लाचार मैं।
२-ज्ञान भक्ति नहीं कछु बन आवे कर्म का निपट गंवार मैं।
३-परमारथ स्वारथ दोऊ खोये भ्रम रहा संसार में॥
४-कैसी करूं उपाय न सूझे दान धर्म व्यौहार में।
५-कायर सम सब को तज डारा कुल कुटंब परिवार मैं॥
६-घर नहीं चैन न बन में शांति घूमा बस्ती उजार में।
७-राधास्वामी धाम की ओर दृष्टि गई आय पड़ा गुरु द्वार में॥

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय।

* मंगला चरण *

प्रार्थना और वन्दना के शब्द

(१)

मंगलम् गुरुदेव मूरति, मंगलम् पद पंकजम्।
मंगलम् अव्यक्त, अनुपम, मंगलम् भव गंजनम् ॥१॥
मंगलम् धुरपद निवासी, मंगलम् सत् आसनम्।
मंगलम् निरवाण सदगति, मंगलम् जन रंजनम् ॥२॥
मंगलम् ज्ञानसस्वरूपम्, मंगलम् आनन्द रूप।
मंगलम् चैतन्य सदनम्, मंगलम् सत सत्य भूप ॥३॥
मंगलम् योगेन्द्र, माया तीत, मंगल दायकम्।
मंगलम् संसार सारम्, अद्भुतम्, मुनि नायकम् ॥४॥
मंगलम् त्रयगुण रहित, अपरोक्ष, प्रोक्ष, निवासनम्।
मंगलम् त्रयकाल ज्ञाता, मंगलम् भव नासनम् ॥५॥
आदि कारण, मूल कारण, मध्य, आदि अनन्त जो।
मंगलम् करुण सदन, शुभ तत्त्व परम, जगत प्रभो ॥६॥
आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने।
शब्द नाव बनाय सुन्दर, जीव दुखित उबारने ॥७॥
प्राण, तन, मन, कर्म, बानी, सब हैं अरपन लीजिये।
मैं हूँ शरणागत् तुम्हारा, दास अपना कीजिये ॥८॥

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी जप सदा।
त्याग जग के मोह धंधे, पाऊँ भक्ती सम्पदा ॥

(२)

(१) बन्दनम् अद्वैत, द्वैत, अभाव, भाव प्रकाशनम् ।
बन्दनम् संसार त्रिबिधि विकार, ताप विनाशनम् ॥
(२) बन्दनम् आदर्श, इष्ट, अपार, पार निवासनम् ।
बन्दनम् गुरु पद्म पद रज, तिमिर दोष विभंजनम् ॥
(३) ज्ञान, ध्यान, न कर्म, सेवा, भक्ति, प्रेम न लह सके।
गुरुदया बिन, मुक्ति धाम का रूप, नहिं कोई कह सके ॥
(४) नित्य, मुक्त, विशुद्ध, निर्मल, सत्त, चित्त, आनन्दमय।
शांति, बुद्धि, अपार, अद्‌भुत, संत सतगुरु पदगहे ॥
(५) राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी गाइये ।
राधास्वामी चरन कमल की ओर सीस झुकाइये ॥

(३)

(१) मंगलम् गुरुदेव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।
मंगलम् त्रयलोक स्वामी, मंगलम् जन रंजनम् ॥
(२) धन्य महिमा आप की है, धन्य अद्‌भुत ज्ञान है ।
आप ही के पद कमल में, सदगती, निर्वान है ॥
(३) राधास्वामी भक्ति दीजे, पार भव से कीजिये ।
निज दया से अपना करके, तार मुझ को लीजिये ॥

(४)

(१) दाता,ज्ञाता,पितु, और माता छिन २ तेरा ध्यान रहे ।
जग त्राता भ्राता, सत राता,तेरे नाम का गान रहे ॥
(२) सुमिरन तेरा,ध्यान हो तेरा,तेरा भजन हर आन रहे ।
तेरी बानी अगम ठिकानी,उसी ओर मेरा कान रहे ॥
(३) तुझको ध्याऊँ, तुझको गाऊँ, तेरा ही अरमान रहे ।
सुमिरन,भजन,ध्यान,सेवा में,मेरा जान और प्रान रहे ॥
(४) सुरत निरत तेरे, रंग राती, तेरे रूप का ज्ञान रहे ।
जहां जहां देखूँ तेरी लीला, तेरा ही अभिमान रहे ॥
(५) जो २ सुनूं सो तेरा बचन हो,मन से दूर मद मान रहे ।
राधास्वामि चरन शरनबलिहारी,भवसे सुरत अलगानरहे ॥

(५)

बांह गहे की लाज सतगुरु !, बांह गहे की लाज ! टेक
(१) आया दीन हीन चरनन में, परमारथ के काज ।
(२) नाम दान दे अपना कीजे, मांगू मान न राज ॥
(३) ज्ञान,न ध्यान,योग,नहिं क्रिरिया, भक्ती साज न साज ।
(४) शरनागत की लज्जा राखो, नहिं तो होय अकाज ॥
(५) राधास्वामि चरन शरन बलिहारी,जग से आया भाज ।

(६)

(१) राधास्वामी चरन कमल पर, बार बार बल जाऊँ ।
तनमन की सब सुद्ध बिसारूँ,निसदिन गुरुगुन गाऊँ ॥
(२) गुरु मेरे जान प्रान से प्यारे, गुरु आंखों के तारे ।

गुरु की दया साध की संगत, जाऊँ भव जल पारे ॥
(३) गुरु रचक, गुरु दाता, दानी, गुरु का लेउँ सहारा ।
गुरु के चरन सीस पर धारे, काल करम थक हारा ॥
(४) गुरु मूरति हिये आन विराजी, घट में करूँ गुरु सेवा ।
तन,मन,धन और सीस अरप कर,जानूं और न देवा ॥
(५) छिन,प्रति छिन,गुरु आरति ठानू,गुरु से नेह लगाऊँ ।
सुरत शब्द की करूँ कमाई,अन्त परम पद पाऊँ ॥
(६) बिन गुरु भक्ति विवेक न होई,गुरु बिन ज्ञान न पाये ।
कर्म धर्म सब धोका जानों,जब लग गुरू न चिताये ॥
(७) गुरू का रंग हृदय जब धारा, मिटा तिमिर अज्ञाना ।
घट से जोत सोत बह निकसी, प्रगटा तब विज्ञाना ॥
(८) गुरू के चरन प्रीति भइ गाढ़ी,समझ पड़ी गुरू बानी ।
मन परतीत,प्रेम रस पागा,मिल गई शब्द निशानी ॥
(९) जोग, बिराग हृदय परकाशा, सूझा सकल पसारा ।
अलख,अगम की गम जब पाई,मिटा मोह संसारा ॥
(१०)पढ़ पढ़ कर बहु दिवस बिताई,बुद्धि विलास में भूले ।
दृष्टि खुली जब गुरू कृपा से, प्रेम हिंडोले झूले ।
(११)कोटि जन्म से धोखा खाया,मिला न ठौर ठिकाना ।
धन्य,धन्य गुरु महिमा तेरी, सत्त नाम दिय दाना ।
(१२) मान न मागूं,सिद्ध न मांगू,रिद्धि में चित्त न लाऊं ।
जन्म,जन्म पद कमल की सेवा, यही पदारथ पाऊं ॥

(१३) सुमिरन नाम ध्यान गुरु मूरति, भजन शब्द मत सारा।
तुरिया, तुरियातीत न चाहूं, रहूं सकल से न्यारा ॥
(१४) गुरु मेरे मात पिता सम्बन्धी, गुरु से नाता जोड़ूं।
भव की लाज लोक सब त्यागूं, जग से मुँह को मोड़ूं ॥
(१५) जो मैं दास तुम्हार दयानिधि, हित, चित, मन कर्म बानी।
राधास्वामी चरन शरन बलहारी, बख्शो पद निर्बानी ॥

(७)

(१) गुरु परम् दीन दयाल प्रगटे, जीव तारन हार।
शब्द नाव चढ़ाय सुन्दर, लाये भव जल पार ॥
(२) कृपा मूरति दया सूरति, ज्ञान गम् भण्डार।
भक्त रंजन जग विभंजन, सकल के आधार ॥
(३) जीव दीन अधीन स्वामी, दुखित अति दिन रैन।
शब्द सार चिताय जन को, सुरत दीजै चैन ॥
(४) मिटै कलि मल बासना, और छुटे मूल विकार।
चरन कमल लगाय सबको, कीजे बेड़ा पार ॥
(५) अपना कीजे, प्रेम दीजे दया दृष्टि संभार।
सहज में भव पार कीजे, लीजे सकल सुधार ॥
(६) जीव निबल अचेत सब विधि, सहत बिपत कलेश।
छोड़ यह परदेश भव का, जांय तुम्हरे देश ॥
(७) शब्द नाद सुनाय घट में, शब्द डोर लखाय।
शब्त का दे आसरा प्रभु, शब्द डगर चढ़ाय ॥

(८) शब्द धाम दिखाइये, और शब्द चित्त बसाय।
शब्द रूप बनाय सब को, शब्द दीजे मिलाय॥
(९) जहां मन की गम् नहीं है, वह तुम्हारा देश।
भक्त जन को निज दया से, इस का दो उपदेश॥
(१०) काल कर्म से विवस हैं जिव, माया मोह फँसाय।
राधास्वामी दयासागर, कीजे इन की सहाय॥

(८)

शरनागत् की लाज स्वामी शरनागत की लाज।
(१) तुम तो आये नर देही में, शरनागत के काज।
मैं हूँ दीन अधीन तुम्हारा, तुम राजों के राज॥
(२) ज्ञान करम की बिधि नहिं जानूं, नहिं भक्ती का साज।
भव भय अधिक सतावे मोको, महा काल सर गाज॥
(३) सुनिये हित चित से यह बिन्ती, संतों के सिरताज।
राधास्वामी चरन शरन बलहारी, दास को तारो आज॥

(९)

चरन कमल की धूर बख्शो, चरन कमल की धूर।
[१] यह धूरी जीवन की मूरी, करे रोग सब दूर।
मांज मांज मन मुकुर का दर्पन, देखूं सत पद नूर॥
[२] आंख लगाऊँ आंजन निर्मल, मिटे तिमिर भर पूर।
दिव्य दृष्टि की जोत अनूपम, ज्ञान ध्यान का सूर॥
[३] करो दया से अपने मेरा मन, मनसा, मद चूर।
राधास्वामी चरन शरन बलहारी निखूं रूप हजूर॥

(१०)

मैं हूं दास तुम्हारा, प्रभु जी मैं हूं दास तुम्हारा ।

[१] तुम मेरे स्वामी, तुम मेरे दाता, तुम मेरे भरतारा ।
तुम से आस लगी है निस दिन, तुम्हरा मुझे सहारा ॥ प्रभूजी

[२] भवसागर अति गहिर गंभीरा, सूझे वार न पारा ।
दया करो करुणा चित लावो, नाव पड़ी मंझधारा ॥

[३] मेरी ओर न देखो स्वामी, मैं हूं अधम अकारा ।
पतित उधारन नाम तुम्हारो, मन में करो विचारा ॥

[४] काम, क्रोध, मद, लोभ भुलाना, रोम २ हंकारा ।
पचलड़, सतलड़, अठलड़, रसरी, केहि विधि हो छुटकारा ॥

[५] तुम देखत नित अवगुन करता, सुध बुध सकल बिसारा ।
बिनती कैसे करूं दयामय, मन से अति ही हारा ॥

[६] प्रेम प्रीत की रीत न जानी, चखा न अमृत सारा ।
भक्ति भाव से परिचय नाहीं, काल कर्म ने मारा ॥

[७] राधास्वामी दया के सागर, करुनामय करतारा ।
त्राह त्राह चरन बलिहारी, आन करो निस्तारा ॥

(११)

[१] सर्व समरथ साइयां तुम जगत के आधार ।
जीव भवजल में पड़े हैं, तुम लगाओ पार ॥

[२] भंवर में नैया फंसी है, बुद्धि है लाचार ।
रात गहरी बहु अंधेरी, सूझे वार न पार ॥

[३] आवो आवो आवो दाता, कर दो बेड़ा पार।
तुम सहाई जीव निर्बल, करो आज सम्हार ॥
[४] शब्द डोरी हाथ देकर, खींच लो करतार।
धाम में दो अपने बासा, तुमहि हो रखवार ॥
[५] राधास्वामी दया सागर दया के भण्डार।
दीन हीन शरन में आए, करो सब की सुधार ॥

(१२)

तेरे चरन की दासि हूँ, गुरु चरन लगा।

१–तू मेरा मैं भी भइ तेरी, तेरी अंश अबिनासि हूँ ॥
२–पपिहा स्वांति की दशा है मेरी, दर्शन की मैं प्यासि हूँ ॥
३–तेरी आस भरोस है मन में, सब से रहत उदासि हूँ ॥
४–अंधरी सुरत निरत नहिं पावे, दया से आज उजासि हूँ ॥
५–राधास्वामी चरनशरन बलिहारी, सत्त धामकी बासि हूँ ॥

(१३)

१–चरन कमल में सीस झुकाऊँ, नित सतगुरु गुन गाऊँ।
तन मन सब अरपूं हितचित से, निसदिन ध्यान लगाऊँ ॥
२–जागूं तो गुरु का रहे सुमिरन, सोऊँ तो लव लाऊँ।
गहरी नींद में लय चिंतन कर, आपा आप भुलाऊँ ॥
३–तुरिया तुरियातीत रहूँ जब, मन में रूप बसाऊँ।
सोवत जागत रूप न त्यागूं, ऐसी ताड़ी लाऊँ ॥
४–गुरु मेरे अगम अपार अमाया, दान दया का पाऊँ।

भक्ति भाव उर बसे निरन्तर, और सकल बिसराऊँ ॥
(५) गुरु की बानी अगम ठिकानी, समझ २ हरखाऊँ ।
जो कोई पूछे जिज्ञासू बन, प्रेम से ताहि सुनाऊँ ॥
(६) गुरु की कृपा साध की संगत, बुद्धि विवेक बढ़ाऊँ ।
निज सरूप का दर्शन पाकर, औरों को दरसाऊँ ॥
(७) भेद वाद का संसय मेटूं, भ्रम विकार नसाऊँ ।
साईं मेहर करो कुछ ऐसी, सबको मर्म बताऊँ ॥
(८) जीव दुखारी तीन ताप से, सुख का भेद लखाऊँ ।
सुमिरन, ध्यान, भजन की किरिया, जानूं जान बताऊँ ॥
(९) बिनती सुनो दयानिधि मेरी, आऊँ कहूँ न जाऊँ ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, प्रेम प्रीत उमगाऊँ ॥

(१४)

दयामय क्यों एती देर लगाई ।
(१) मैं तो पतित निकाम नकारा, अंग अंग में जड़ताई ।
अपनी जड़ता सोच समझ मन, ली चरनन शरनाई ॥
(२) भवसागर में नाव पड़ी है, नहिं कोई संग सहाई ।
त्राह २ स्वामी नित्त पुकारूँ, दुख संकट कट जाई ॥
(३) मेरी ओर न देखो कब हीं, मुझ में कहां भलाई ।
अपनी दया की ओर निहरो, तुम में दया अधिकाई ॥
(४) नहिं पुरुषारथ नहिं बल मोरे नहिं धन धाम बड़ाई ।
दीन अधीन शरन में आया चरनन चित्त बसाई ॥

(५) देर भई बहु देर भई है, काज महा दुखदाई ।
राधास्वमी चरन शरन बलहारी,लो भव खेद मिटाई ॥

(१५)

धीर भीर गंभीर सतगुर करो मेरी सहाय ।

(१) बिकल तन होय निकट आया, सीस चरन झुकाय ।
जान सेवक दीन अपना, लेव शरन लगाय ॥
सतगुर करो मेरी सहाय ॥

(२) दिवस रवि बिन, रैन शशि बिन, नाहिं सोभा पाय ।
नाम बिन यों दुखित प्रानी सहत दुख अधिकाय ॥
सतगुर करो मेरी सहाय ॥

(३) लोभ मोह की धार दुसतर, बूड़ सब समुदाय ।
भंवर निसदिन उठत पल पल, देख जिया घबराय ॥
सतगुर करो मेरी सहाय ॥

(४) मेघ बरस अखंड धारा, पवन बह पुर्वाय ।
चकित मन भय भीत अतिकर,नैन कछु न सुझाय ॥
सतगुर करो मेरी सहाय ॥

(५) भक्त हित तुम जगत आये, शब्द नाद बजाय ।
राधास्वामी कृपा सागर, लेव अबही चढ़ाय ॥
सतगुर करो मेरी सहाय ।

(१६)

१—जग का स्वामी, जग का दाता, जग का पालन हारा ।
जगत्राता, जग का पितु माता, जग का राखन हारा ॥

२–चरन कमल में सीस झुकाऊं,निसदिन तेरा गुन गाऊँ।
काम क्रोध मद त्याग ईर्षा, तुझ से नेह लगाऊँ ॥
३-निसदिन सुमिरूँ पलपल ध्याऊँ ,छिन प्रति छिन गुन गाऊँ।
दुख में सुख में हर्ष शोक में,चरनन पर बल जाऊँ ॥
४–सिन्धु एक अति घोर गंभीरा, नाव न बेड़ा भारी।
दिन प्रति दिन जप नाम निरंतर,जाउँ भव जल पारी ॥
५–भक्ती दीजै मुक्ति न दीजै, ज्ञान न दीजे स्वामी।
राधास्वामी चरनशरन बलहारी गुरुपद कमल नमामी ॥

(१७)

१–दीन बन्धु कृपाल स्वामी, जगत के आधार।
प्रेम भक्ती दान दीजे, कीजे बेड़ा पार ॥
२–मुक्ति की नहिं मन में इच्छा, भक्ति दीजे दान।
प्रेमियों का साथ दीजे, साध संगत मान ॥
३–तार लीजे अधम पापी को, दया से आज।
राधास्वामी सतगुरू अब मेरी तुम को लाज ॥

(१८)

१–सिरजन हारा पालन हारा राखन हारा श्रुति सारा।
जानन हारा धारन हारा मारन हारा रखवारा ॥
२–महिमा बिमल अनूपम तेरी,सब में रमा सबसे न्यारा ॥
ऋषि मुनि कोई भेद न पावे, वेद कहे अपरम पारा।
३–कारन, कारज, कर्म बिधाता, हरता, धरता, करतारा ॥

राता, माता, अपनी दशा में, परम तत्व का भण्डारा।
४—तेरे बिना नहिं कोई रक्षक, सबका तू है आधारा।
प्रीतम, प्यारा, भक्त सहारा, जन की आँखों का तारा ॥
५—भूल भटक से भ्रम मोह से, प्रभु दे सबको छुटकारा।
जग का द्वन्द मिटा करुनामय, पहुँचा दे भव जल पारा ॥
६—घट घट बासी, सकल प्रकासी, हित सुत और सम्पत वारा।
अन्तरयामी, सबका स्वामी, धन यश मंगल परिवारा ॥
७—भक्ति दान दे, शक्ति दान दे, बुद्धि दान दे दातारा।
राधास्वामि चरन शरन बलहारी, रहूं बसूं चरनन लारा ॥

(१६)

१-आँखों का तारा, सबका सहारा, हित चित से तू प्यारा है।
निर्मल शुद्ध बुद्ध हितकारी, सुख सम्पति परिवारा है ॥
२—घट घट बासी, आनन्द रासी, अबिनासी मंगलकारी।
रोम रोम में रमता, जोगी, रोग सोग से न्यारा है ॥
३—गुनातीत गोबिन्द मुरारी, पुरषोत्तम करुना सागर।
जन मन रंजन, दोष विभंजन, प्रेम प्रीत भण्डारा है ॥
४—नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं, ध्यान धरत कलि मल भागे।
भव दुख मेटन, दोष नसावन, भक्ति रीत का सारा है ॥
५—कर्म धर्म वैराग ज्ञान तत, विज्ञानी पूरा सच्चा।
हे दयाल करो दृष्टि दया की, हृदय दुखी हमारा है ॥
६—पतित उधारन, भव निधि तारन, खंजन काम, क्रोध, मत्सर।

राधास्वामी सतगुरु दाता, यह सब नाम तुम्हारा है ॥

(२०)

१–नाम दान दे अपना कीजे, गुरु निज सेवक जानी ।
चरन शरन की ओट बख्श कर,दीजे शब्द निशानी ॥
२–मान न माँगूं,धन नहिं माँगूं, नहिं सुख चैन बिलासा ।
गुरु का अमृत नाम पाय कर, करूं गुरू की आसा ॥
३–गुरु मेरे पूरन परम सनेही, गुरू दाता गुरु ज्ञानी ।
गुरु के बल छूटे जम फन्दा, मिले धाम निर्बानी ॥
४–गुरु की आस भरोस रहे मन, जग से रहूं उदासा ।
गुरु को समरथ सब विधि जानूं ,तजूं सकल की आसा ।
५–राधास्वामिराधास्वामि पलपल गाऊं,राधास्वामी लव लाऊं ।
राधास्वामि मेरे गुरू दयाला, गुरु पद नेह लगाऊं ॥

(२१)

१–तुम आए इस जगत में, दीन जीव के काज ।
अब तो तारे ही बने, तुम्हें हमारी लाज ॥
२–हमतो आप हि पतित हैं, तुम हो पतित उधार ।
आय पड़े भव सिन्ध में, कीजे भव जल पार ।
३–शब्द जहाज चढ़ाय कर, सुरत निरत की डोर ।
बेड़ा कीजे पार प्रभु, निरख आपनी ओर ॥
४–दुख भंजन मन रंजना, साज भक्ति का साज ।
दीन दुखी को तारिये, सन्तों के सिरताज ॥

५–तुम तो समरथ साइयाँ, सब जग के आधार।
साध संग नित दीजिये, राधास्वामी परम दयार।

(२२)

१–धन धन भव भंजन, जन मन रंजन, काम निकन्दन गुरुराई।
धन सुर मुनि नायक भक्त सहायक, सुखदायक धन् प्रभुताई॥
२–धन् करुना सागर, सब गुन आगर, गुनातीत गोविंद हरी।
धन् घटघट बासी, प्रभु अविनासी, सुखरासी दुखनास करी॥
३–धन् ज्ञानी, ज्ञाता विश्व विधाता, सर्व जनन के पितु माता।
धन् कर्त्ता धर्ता नेह के सरिता, मुक्ति भक्ति के निज दाता॥
४–धन् परम स्याने वेद बखाने, ऋषि मुनि जान न चतुराई।
धन् दीन दयाला सहज कृपाला, वार पार नहिं कोई पाई
५–धन् मंगलकारी, जग हितकारी, सुखकारी दाता दानी।
राधास्वामि कृपाला-जनप्रतिपाला सत, चित्, आनन्द की खानी

(२३)

(१) तेरी अस्तुति क्या करूं देवा, मन वानी के पार है तू।
परम तत्व आनन्द परम धन्, परमारथ का सार है तू॥
(२) अगम्, अनाम्, अकाम, अमाया, अन्तर बाहिर व्यापा है।
अकथ, अथाह, अरूप, अगोचर, आप आप का आपा है॥
(३) अगुन, सगुन, अद्वैत, द्वैत, में, सबमें सब से न्यारा है।
सब में रमा निरन्त बासी, सबसे अपर अपारा है।
(४) मंगलमय, मंगल की खानी, ज्ञान बुद्धि भंडारा है।
अलख, अलौकिक, अमर, अजर, विभु, शब्द जोति टकसारा है॥

(५) बेद न जाने भेद अनूराग, किसि विधि वरन कहुँ देवा।
राधास्वामी चरन शरन बलहारी, गुरु स्वरूप की कहुँ सेवा॥

(२४)

(१) दयामय, दीन दुखी भंजन, कृपाविधि भक्त मन रंजन॥
(२) कमल पद की शरन दीजे, पतित की लाज रख लीजे॥
(३) जगत में कष्ट बहु पाया, चरन में आपके आया॥
(४) बिकल मन चित्त घबराया, तुम्हारा ध्यान तब आया॥
(५) चरन की ओट में लीजे, अटल भक्ती का बर दीजे॥
(६) भिकारी आपके द्वारे, पड़ा त्रैं ताप के मारे॥
(७) पिला दो प्रेम का प्याला, रहै दिन रात मतवाला॥
(८) करम के जाल से भागे, अमी इस नाम में पागे॥
(९) यही मन को है अभिलासा, करो पूरी प्रभु आसा॥
(१०) बिनय राधास्वामि हितकारी, सुनो भवसे करो पारी॥

(२५)

तेरी गति मति कौन लखै!

(१)वेद न जाने महिमा तेरी, ऋषिमुनि फिरें भरम की फेरी।
शारद तेरे दर की चेरी, आनहि आन बकै।
(२) अपरम पार, पार निह पारा, तू है सार असार का सारा।
अजर, अमर, अविनासी, प्यारा, घट घट व्याप रहै॥
(३)नहीं एक, और नही अनेका, सब बिधि किया विचार बिवेका।
भूले ज्ञानी, ध्यानी, भेषा, कोई न मर्म लहै॥

(४) तू प्रकाश है तू परछाईं, तू है परम तत्व तू झाँई।
कैसे अस्तुति करूँ गोसाईं, सुद्ध बुद्ध भरम बहै ॥
(५)अनहित सहित सकल हितकारी, निराधार तू जगदाधारी।
राधास्वामि चरन शरन बलहारी सेवक भक्ति चहै ॥

(२६)

(१) तू अविनाशी अजर अमर है, तू सबका आधारा है।
सब रहते हैं तेरे सहारे, तू ही सबका सहारा है॥
(२) निराधार, आधार जगत का, मर्म न कोई लख पावे।
जब तू अपना रूप देखावे,समुझ में तब कुछ २ आवे।
(३)मन बानी की गम नहिं तुझमें,अगम अथाह अपारा है॥
अलख,अमल,अव्क्त,अरूपम,अगुन सगुन से न्यारा है।
(४) तू है कौन कहाँ से आया,क्यों आया क्यों भाया है॥
क्यों आकर मुझे अंग लगाया,क्यों स्वरूप दिखलाया है॥
(५)तू मैं है या मैं ही तू हूँ,क्या है केहि बिधि मैं पाऊँ।
तू अनाम है तू अरूप है, कैसे तेरा गुन गाऊँ॥
(६)अचरज,अचरज,अचरज तू है,गुप्त प्रगट में बासा है।
माया तीत अगोचर उनमुन,छांह न दिव्य प्रकाशा है॥
(७) पात पात में तेरी लाली, फूल फूल का बास है तू।
दूर बताता है कोइ कैसे,सबके सब बिधि पास है तू॥
(८) गुरू हुआ चेले के घट में, परगट होकर रहता है।
बुरा भला लाखों कहे कोई, सबकी सुनता सहता है॥

(९) नहीं गुरू नहीं चेला है तू दोनों दशा से न्यारा है ।
हद बेहद से परे ठिकाना, तेरा सकल पसारा है ॥
(१०) आजा,आजा,मेरी सुन जा, मेरे हिरदय में बस जा ।
प्रेम प्रीत की जाल बनाई, उसके फन्दे में फंस जा ॥
(११)ऐ अरूप तेरा मुखड़ा देखूँ,दरशन की अभिलाष घनी।
मैं निर्धनी दीन शरनागत तू है सबका आप धनी ।
(१२) आरत कैसे करूं गोसाईं,तेल, दिया, बाती है तू ।
फूल चढ़ाने से क्या होगा, कली फूल पाती है तू ॥
(१३) जहां जहां निरखूं तेरी लीला,जो जो सुनूं तेरी वानी ।
जो जो कहूं तेरी हो कहानी, रहूँ तेरा मैं अभिमानी
(१४)मुख का शब्द तेरा हो सुमिरन,जो गाऊं सो भजन तेरा ।
जो ध्याऊं वह ध्यान तेरा हो, जो बोलूं वह कथन तेरा ॥
(१५)बल बल जाऊं तेरी दया पर,जान प्रान तनमन अरपूं ।
राधास्वामी चरन की महिमा गा,गा,काल,कर्म सेनहिं डरपूं ॥

(२७)

१–तू जगदीश जगत का कर्ता, तेरा मन में ज्ञान रहे ।
तेरी लगन लगै निसवासर, तेरा निसदिन ध्यान रहे ॥
२–अनाम, तू माया तीता, गुणातीत करुण सागर ।
सुख संपत्ति परलोक बड़ाई तुझ में यश और मान रहे ॥
३-चरन कमलकीशरनमिले स्वामी,भक्तिभाव हिये में आवे ।

तेरी प्रीति प्रेम पद का प्रभु,छिनछिन प्रति छिन गान रहे ।।
४-दोऊ कर जोड़ करूं मैं विनती,क्षमा करो अपराध मेरे ।
तेरी सेवा तेरी पूजा, तेरा ज्ञान अनुमान् रहे ।।
५-रसना नाम जपै तेरा पलपल,दरशन की अभिलाष बड़ी ।
शब्द की ओर निरन्तर मेरे,सुरत निरत का कान रहे ।।
६-जग की मान बड़ाई न मांगू, नहिं मांगू धन परिवारा ।
भक्ति दीजिये चरन कमल की भक्ती से कल्यान रहे ।।
७-छल, चतुराई, कपट, कुटिलता,कालकरम से बहु हारे ।
शरनागत की सुधि प्रभू लीजे, चरन शरन में आन रहे ।।

(२८)

१-धन्य धन्य सतगुरू दयाला,किरपा सागर, दुख भंजन ।
संकट मोचन,भव भय खंजन,काम निकंदन,जनरंजन ।।
२-कोटि काम छबि अंग बिराजै, सोभा धारी हितकारी ।
सुर नर ऋषि मुनि ध्यान लगावें,इन्द्र बरुन आज्ञाकारी ।
३-सेष सहस मुख बरने महिमा, नारद शारद गुन गावें ।
अस्तुति ठानें, पूजा धारें, भक्ति अनूपम बर पावें ।।
४-अपरम पार पार पुरुषोत्तम, व्यापक,विरज,महान महा ।
वेद बखाने लीला तेरी,समझ समझ पद कमल गहा ।।
५-तू है सिन्ध अगाध,गंभीरा,लहर बिष्णु,अज,त्रिपुरारी ।
धन्य धन्य तु धन्य धन्य है, धन्य धन्य जगदाधारी ।।
६-सबका प्यारा,सबका प्रीतम,घट घट का तू नित बासी ।

आनन्द, मंगल रूप है तेरा,आनन्द मय आनन्द रासी ॥
७-सहस कमल में जोत निरंजन,तिरकुटी पद का ओंकारा ।
सुन्न महासुन परब्रह्म तू, भँवर गुफा सोहंग सारा ॥
८-सत्तलोक का सत्तपुरुष तू, अलख अगम का करतारा ।
राधास्वामि धाम में राधास्वामी,सुरत शब्द का भण्डारा
९-तेरी सेवा, तेरी पूजा, तेरा सुमिरन, ध्यान रहे ।
राधास्वामि चरन शरन बलिहारी तेरा ज्ञान हर आन रहे ॥

(२९)

१-धन,रूप,भूप, अनूप, निगुर्ण, सगुन, गुन कारी प्रभू ।
धन अजर, अमर, अतीत,सोभा,सिन्धु हितकारी प्रभू ॥
२-नहिं भेद तेरा कोइ जाने, ज्ञान घन, धरनी धरम् ।
तू मंत्र जंत्र है, तंत्र गोप है, संत जन मन रंजनम ॥
३-जो प्रगट गुप्त अशोच,निर्मल,असम,सम,सीतल सदा ।
सोइ नाथ करुनापुंज कीजै, दास सेवक पर दया ॥
४-धन वार,पार, अपार,मध्य, अनन्त, आदि विशेश्वरम ।
तेरि बन्दना करें भक्त निस दिन,काम खल दलगञ्जनम ॥
५-जेहि नेति नेति पुकारे अगम,निगम न भेद को पावहीं ।
जप जोग त्याग विराग संयुत योगि,ऋषि मुनिध्यावहीं ॥
६-धन सन्त रूप कृपा बिशेष जो जीव निबल को तारहीं ।
भज राधास्वामी नाम सतगुरु और सकल बिसारहीं ॥

(३०)

१–अज्ञान बस नहिं तुमहिं जाना, कैसे कोइ जाने तुम्हें ।
जहां बानि मन की गमनहीं,कोइ कैसे पहिचाने तुम्हें ॥
२–तुम रूपवान अरूप हो, तुम आप जगत सरूप हो ।
तुम आप भव निधि कूप हो,तुम चरअचर के भूपहो ॥
३–अज्ञान भर्म के जाल में, फंस कर तुम्हें जाना नहीं ।
इस कठिन मोहकी छाया में,प्रभु तुमको पहिचाना नहीं ॥
४–पदकमल सीस बिराजिया,त्रय ताप सकल बिनासिया ।
अघ पाप पूरे नासिया,प्रभु ! कीन्हा सहज उदासिया ॥
५–मेरे अब तो अवगुन मेटिये,चरनों में मुझको लीजिये ।
राधास्वामी निज जन जानकर,पदपदम भक्ती दीजिये ॥

(३१)

१–सबकी आदि अन्त तू दाता, धन्य धन्य तेरी माया ।
व्यापक,सतचित,आनन्द स्वामी,कर निज दासन पर दाया ॥
२–तेरी थाह न पावे कोई, अगम, अपार से पार है तू ।
लीला तेरी सबसे अदभुत,एक तीन दो चार है तू ॥
३–जड़ चेतन में तेरी छाया, क्या क भेद तेरा जाने ।
योगी,ऋषि मुनि ध्यान लगावें,सबमें विभु तुझको माने ॥
४–हम सब तेरे बाल ग्वाल हैं,तू पितु,मात,सखा,स्वामी ।
सबमें रमा सकल से न्यारा,घट घट का अन्तरजामी ।
५–विमल, अरूप, अनूप,अमाया,मायाधीश अनाम है तू ।

राधास्वामि चरन शरन बलहारी, संतन का विश्राम है तू ॥

(३२)

१–प्रानों का है प्रान पिता तू, जीवन का है आधारा ।
निर्भर यह ब्रह्माण्ड है तुझ पर, तू है सबका रखवारा ॥
२–तू है जोत नैन की सबके, तू है घट २ का बासी ।
अन्तरयामी प्रीतम प्यारा, अजर, अमर, बिभु, अविनासी ॥
३–जल में तेरी शीतलता है, तेज में है परकाश तेरा ।
वायू में शक्ती है तेरी, और अकास में भास तेरा ॥
४–तू है एक, अनेक रूप में, अगम, अगोचर, निरमाया ।
यह ब्रह्माण्ड तेरी है काया, फिर भी तू है निह काया ॥
५–बिन पग चलत, सुनत बिन काना, बिन जिह्वा बाचाल है तू
माया मोह से रहत निरन्तर, सब जग का प्रतिपाल है तू ॥
६–तू है देस, निमित्त भी तू है, और कहूं क्या काल है तू ।
जड़ चेतन है, कारन, कारज, करुनामय, किरपाल है तू ॥
७–फूल २ में बास है तेरी मेंहदी में है तू लाली ।
चकमक में ज्यों आग छुपा है, इक तिल नहिं तुझ से खाली ॥
८–दया सिन्ध है, दीन बन्धु है, भक्त जनन का हितकारी ।
सृष्टि, प्रलय लीला है तेरी, तू है हलका, तू भारी ॥
९–तू व्यापक तू अविछिन्न है, तू सब में सब हैं तेरे ।
सब में रमा, अलग है सबसे, सबसे दूर सब के नेरे ॥
१०–रोम रोम में गुप्त हुआ है, अनू अनू में प्रगट है तू ।

हृदय गुफा में बास है तेरा, जीव जन्तु का घट है तू ।
११–महिमा अनिमा लघिमा, गरिमा, हैं अनेक सब तेरे रूप।
तू सेवक है तू स्वामी है, तू परजा है तू है भूप ॥
१२–क्या मांगूं तुझ से मैं स्वामी, तू मेरा मैं हूं तेरा ।
खोजूं क्या मैं देस देस में, हिय में है तेरा डेरा ॥
१३–गुरू के भेस में मुझे मिला तू, दया मिहर से अपनाया ।
राधास्वामी चरन शरन बलहारी, पद सरोज की दे छाया॥

(३३)

१–सहज में भव पार कर दो, नाव है मंझधार में।
है तुम्हारे हाथ रक्षा हूँ, दुखी संसार में ।।
२–शब्द साखी क्या सुनूं मैं, सुनते जी अब भर गया ।
मुझ को जीता तुम न समझो, जीते जी मैं मर गया ।।
३–तुम ने मेरी बांह पकड़ी, अब तुम्हीं को लाज है ।
राधास्वामि सतगुरु मेरे, अटका मेरा काज है ।

(३४)

१–धन धन जग त्राता, धन त्रिभुवन स्वामी ।
धन धन धन पितु माता, धन अन्तरयामी ।।
प्रभु धन अन्तरयामी ।।
२–भक्ति भाव स्वामी पाऊं, चरन शरन ध्याऊं ।
चरनन चित्त लगाऊं, सेवा में ध्याऊं ।।
प्रभु सेवा में ध्याऊँ ।।

(३) आदि गुरू परमातम, तुम मंगल कारी ।
जन सेवक सुख दायक, जीवन हितकारी ॥
प्रभु जीवन हितकारी ॥
(४) प्रेम रूप कर्तारा, घट घट के बासी ।
मन बुद्धी से पारा, अनुपम अबिनासी ॥
प्रभु अनुपम अबिनासी ॥
(५) प्रेम दान मोहिं दीजे सन्तन की सेवा ।
सतसङ्ग का फल पाऊं, देवन के देवा ॥
प्रभू देवन के देवा ॥
(६) त्रिबिध ताप दुख मेटो,कर लो मोहिं अपना ।
अवगुन चित्त न लावो, दूर करो तपना ॥
प्रभू दूर करो तपना ।
(७) तज तीनो जल्दी, प्रभू पद चौथा पाऊं ।
काल जाल से भागूं,राधास्वामी गुन गाऊं ॥
प्रभु राधास्वामी गुन गाऊं ॥

(३५)

(१) दया दृष्टि कीजै मुझे तार लीजे ।
लगा अपने चरनों से भव पार कीजे ॥
(२) रहे बासना नाम को भी न मन में ।
कटे दिन मेरा भक्ति में और भजन में ॥
(३) सदा सर्वदा नाम ही की लगन हो ।

तुम्हारा ही सुमिरन तुम्हारा भजन हो ।

(४) तजी बासना और चरनों में आया ॥

न व्यापे मुझे जक्त का मोह माया ।

(५) जपूं जागते सोते मैं राधास्वामी ।

कहूं पद में झुक कर नमामी नमामी ॥

(३६)

१-हाथ जोड़ नवाय मस्तक, चरण कमल की बन्दना

शुद्ध मन से ध्यान सुमिरन, जन्म को लूं मैं बना ॥

२-नींद में हो दण्डवत, जागृत परिक्रमा मेरा ।

जब सुषुप्ती का समय हो, हृदय में हो घर तेरा ।

३-देखूँ तेरा रूप पल पल गाऊँ, तेरे नाम को ।

रूप नाम के आसरे, गुरु पाऊँ मैं बिसराम को ॥

४-नाम का रसना में रस हो, कान अनहद धुन सुने ।

तेरी लीला की कथा को, बुद्धि, मन, चित सब गुने ॥

५-बोलूं जब तेरा कथन हो, चुप रहूँ तेरा मनन ।

मेरा सब कुछ तुझ पै अर्पन, देह, बानी, चित्त, मन ॥

६-दृष्टि दे ऐसी मुझे यह, जगत तेरा रूप हो ।

गोते मारूँ तुझ में छिन छिन, तू अमो का कूप हो ॥

७-तू हो मेरा मैं हूँ तेरा, और से क्या काम है ।

तेरा सेवक जब हुआ, होठों पै तेरा नाम है ॥

८-तू है दाता तू विधाता, तेरी केवल आस है ।

हो गया भंवरा कमल पद का, चरन में बास है ॥
९–देख अवगुन को न मेरे, मैं हूँ अवगुन से भरा ।
तू गुनागर है दयामय, दे चरन का आसरा ॥
१०–प्रेम तेरा, तेरी भक्ती, तेरी सेवा ध्यान हो ।
तेरा सुमिरन और भजन हो, तेरा अन्तर ज्ञान हो ॥
११–राधास्वामी सतगुरु करतार, संकट काट दे ।
छीन ले सब सम्पदा, भक्ती का मुझ को ठाठ दे ॥

(३७)

भक्तन के लाज काज सतगुर जग आये ।
(१) साजा मंगल समाज, थापा भक्ती का राज ।
सुख सम्पत रहे गाज, आनन्द झर लाये ॥
(२) घट में बाढ़ी प्रतीत, उपजा मन प्रेम प्रीत ।
सीखी सुरत शब्द रीत, चरनन लव लाये ॥
(३) प्रगटा हिये सत का नूर, बाजा अनहद का तूर ।
काल कर्म हुये दूर, ज्ञान गम्य पाये ।
(४) काम क्रोध लोभ मोह, अहंकार दुर्मति दुरोह ।
माया, ममता का छोह चित्त न रहाये ॥
(५) राधास्वामी प्रेम रूप, अद्भुत अचरज अनूप ।
ज्ञान ध्यान ब्रह्म रूप, देखा हरखाये ॥

(३८)

(१) नाम दान प्रदान कीजे गुरू दीन दयाल ।

चरन का नित्त ध्यान,सुमिरन चित न व्यापे काल ॥
(२) सर्व समरथ, सर्व अंग संग, सर्व जगदाधार ।
शुद्ध मन से पद कमल का करूँ निस दिन प्यार ॥
(३) सिन्ध भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।
विकल मन रहे सोच छिन छिन, कैसे जाऊं किनार ॥
(४) दया कीजे मेहर कीजै, लीजै चरन लगाय ।
भक्ति दीज तार लीजै, कीजै मेरी सहाय ॥
(५) शब्द में रत रहूँ पल पल, सुरत पावे चैन ।
राधास्वामि दया सागर, भजूं मैं दिन रैन ॥

(३६)

(१) कोट स्तुति बन्दना करूँ, सीस चरन झुकाय ।
हृदय भँवरा पद कमल स्वामि,छोड़ अन्त न जाय ॥
(२) रिद्धि सिद्धि न मागुँ नवनिधि, चित्त नित्त उदास ।
चरन शरन की सेव निशदिन रहे मन की आस ॥
(३) भजन सुमिरन ध्यान पूजा, ज्ञान कर्म न जान ।
प्रीत रीति का सार प्रभु, क्या जाने यह अनजान ॥
(४) दीन हीन अधीन सब विधि, त्याग सब की आस ।
आय चरनन में पड़ा, तुम दीजो चरन निवास ॥
(५) प्रेम धार बहाय, खोलो, आज अमृत खान ।
ज्ञान सूर प्रकाश पावे, मेटो सब अज्ञान ॥
(६) चढ़े सुरत अकाश मेरी, करे शब्द बिलास ।

आस केवल गुरू चरन की, जग से सदा निरास ॥

(७) नाम रतन का दान दीजे, साध संग बहार।
राधास्वामि दया कीजे, तुम हो पतित उधार।

(४०)

(१) चरन शरन की बन्दना नित, कोई और न काम।
गुरू बसो चित आय मेरे, बख़्श दो निज नाम ॥

(२) तेरी शरनागत हुआ जब, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ॥

(३) रूप ध्याऊँ नाम गाऊँ, शब्द राता मन।
आठों जाम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ॥

(४) सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय।
पतित पापी तर गया गुरू शरन तेरी आय ॥

(५) मुक्ति की नहिं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामि की दया से, भाग पूरन जाग ॥

(४१)

१–गुरु गति अगम अलौकिक अद्भुत सोभा कही न जाय।
महिमा अकह, अपार, सिन्धवत अधिक अधिक अधिकाय ॥

२–घट घट बासी, विभु, अविनासी, चेतन सहज उदासी।
रूप, अरूप सरूप, अनूपम, सुख आनन्द घन रासी ॥

३–नारद, सारद, सेस, वरुन, रवि, शशि को बरनै पारा।
परम तत्व, शुभ सदन अयन छवि, रचना के आधारा ॥

४–ज्ञान, ध्यान का पंथ चलाया जोग, जुगति बतलाई ।
भव भय जाल से जीव निकारा, जम की फाँस कटाई ।।
५–कलिमल दहन, विभंजन त्रै दुख दीन अधीन सहाई ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, धन जिन भक्ती पाई ।।

(४२)

१–स्वामी, प्रीतम, दाता दानी, गुरू तुम भूप हो मेरे ।
तन, मन, धन सब तुम पर वारूँ रूप सरूप हो मेरे ।।
२–मुक्ति धाम धुर लोक निवासी अन्तर घट के बासी ।
सत, पद चैतन घन, निर्बानी सुख, आनन्द के रासी ।।
३–करुना सागर, सब बिधि आगर, नागर सोभा धारी ।
निराधार, जग के आधारा, जीवन के हितकारी ।।
४–आप आप में आप समाने, आप में आपा दरसा ।
ज्ञान, ध्यान, अनुभव गति जानी, चरन कमल जब परसा ।।
५–सिन्ध गंभीर धीर जल भरिया, लहर उठें अति भारी ।
राधास्वामि चरन शरन बलिहारी, सब के सब से न्यारी ।।

(४३)

मैं पइयाँ परूँ, गुरु मेरा आप सुधार करो (टेक)
१–भव जल में नाव नहीं बेड़ा, बहियाँ पकड़ मुझे पार करो
२–गोते खाते बहु दिन बीते, अब तो गुरू निस्तार करो ।
३–लहर लहर बिच भंवर भंवर है, अपनि दया उद्धार करो ।
४–हाथ पाँवं नहिं सकत है बाक़ी, समरथ तुमहिं संभारकरो ।

५—राधास्वामि चरन शरन बलिहारी, प्रेम अग्नि उदगार करो

(४४)

तुम मेरे प्रान अधारे दाता, तुम मेरे प्राण अधारे (टेक)

(१) तन मन धन चरनन पर अरपूँ, जियूं तुम्हारे सहारे।

(२) तुम बिन मेरा और न कोई, कुल कुटुम्ब परिवारे ॥

(३) मुझ को भी दो चरन निवासा, बहु जीवन को तारे।

(४) हाथ पकड़ भव भँवर से स्वामी, जल्दी करो किनारे ॥

(५) राधास्वामि चरन शरन बलिहारी, तुम ही हो रखवारे।

(४५)

सांई भव निध के पार लगा (टेक)

१—अगम अपार जगत का सागर, डूबे अवगुन और गुन आगर
बूड़े सकल चतुर नर नागर, पाया कष्ट महा ॥

२—रात अंधेरी पंथ न सूझै, डगमग नाव लहर से जूझै।
कोई अपना दुख नहीं बूझै, खेवटिया तु कहां रहा ॥

३—पवन बहै चहुँ दिस झकझोरी, भंवर करै बहु जोरा जोरी।
चाहत है नैया मेरी बोरी, अब तो मन में धार दया ॥

४—बेड़ा आन पड़ा मंझधारा, नज़र न आवै हाय किनारा।
रहा किसी का नाहिं सहारा, साहिब मेरे तेरे सिवा ॥

५—औरन को तारा बरियारी, अब क्यों देर हमारी बारी।
राधास्वामि चरन शरन बलिहारी, डूबत को ले आन बचा

(४६)

दुखियों का तू सहारा स्वामी,नाम तेरा है कर्तारा (टेक)
१–निर्गन,सगुन रूप प्रभू तेरा, निराकार और साकारा।
वार पार कोई नहिं पावै, वेद कहै अपरमपारा ॥
२–अन्तरयामी, घट घट बासी, अविनासी, जगदाधारी।
जब लग दया दृष्टि नहीं तेरी,जाय कोइ भव जल पारा ॥
३–पतित उधारन, भव भय तारन,कारन, कारज, करतारा।
दीन बन्धु, करुना के सागर,आगर,अद्भुत रखवारा ॥
४–टूटी नाव, पड़ी भवसागर, आनधंसी है मंझधारा।
काढ़ निकारो करुना सिन्धू, बेग सुनो मेरे भरतारा ॥
५–काल कराल महा दुखदाई, कैसे पाऊं छुटकारा।
राधास्वामि चरन शरन बलिहारी,कर दो मेरा निस्तारा।

(४७)

तुम ही प्रान अधारे सत्गुरु, तुम ही प्रान अधारे (टेक)
१–हम तो दीन अध न सकल विधि, सांई तुम रखवारे।
२–भव जल नाव पड़ी मंझधारा, लीन्हों काढ़ किनारे ॥
३–भजन बन्दगी भक्ति न जानी, जियें तुम्हारे सहारे।
४–जब जब विपति कष्ट दुख व्यापा,तब तब तुमहि सम्हारे
५–मात पिता भाई सुत बन्धु, कोई नहिं हमारे
६–तुम समान रक्षक नहिं कोई, देखे हृदय विचारे।
७–राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, हम सों पतित उधारे,

(४८)

चरन शरन की छाया दीजे, चरन शरन की छाया (टेक)

१–मैं तो दीन अधीन दया मय, मोह जाल लपटाया।
तुम प्रभु जीव उबारन आये, कीजै पतीत पर दाया ॥

२–दूब्धा, संशय, छल, चतुराई, भूल, भरम भरमाया।
भाग सोग में निस दिन रहता, व्यापा काम मद माया ॥

३–अगम, अगोचर रूप तुम्हारा, कोई भेद न पाया।
मैं अजान कुछ मर्म न जानूँ, महिमा क्या कहूँ गाया ॥

४–मुझ सम पापी और न कोई, मन वच, कर्म और काया।
नाम दान की रिद्धि निद्धि दीजै, भिक्षा मांगन आया ॥

५–ज्ञान ध्यान भक्ती गुरू सेवा, श्रुति, समृति बहु गाया।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरू ने आन चिताया ॥

(४९)

जल्दी बांह गहो, पिता प्यारे जल्दी बांह गहो (टेक)

१–दुख कलेश में व्याकुल रहता, भव की धार बह्यो।
२–तुम बिन और न कोई रक्षक, चरनन आय परो ॥
३–देर देर बहु देर भई है, बिपत न जात सह्यो।
४–मुझ सम पापी और न दूजा, क्या कहुँ बहुत कह्यो ॥
५–राधास्वामी समरथ दीन दयाला, मिहर की दृष्टि करो।

(५०)

सांई मेरी नैया लगादो पार (टेक)

(१) टूटी नैया, रात अंधेरी, सुझै वार न पार।

बरसै मेंह अखंडित धारा, झर झर बहै बयार ॥
(२) तुम खेवटिया चतुर सयाने,तुम जग के करतार ।
जन हितकारी नाम तुम्हारा,दानी पुरुष अपार ॥
(३)तुम दयाल,तुम समरथ दाता,तुम सबके आधार ।
तुम्हरे देखत भव जल डूबूं,अबतो करो उधार ।
(४) गहिरी नदिया, भंवर में नैया,डूब रही मंझधार ॥
अब तो लाज तुम्हें है मेरी,कर दो आज किनार ॥
(५) संग न साथी कोई मेरा, कोई नहिं हितकार ।
राधास्वामि चरन शरन बलिहारी,टेरत तुमहिं पुकार ।

(५१)

मैं हूँ सेवक सच्चा तेरा, तू सच्चा सांई मेरा ।
आजा दरस दिखाजा प्यारे, करजा कभी इधर फेरा ।
(१) मन मन्दिर मेरा है सूना, आकर उसे बसा दे तू ॥
उजड़ा नगर लोग सबभागे,झटपट आके सजा दे तू ॥
मन मोहन अद्भुत छबिवाला, अपना रूप दिखादे तू ।
मेंह नेह का,प्रेम प्रीत का हित चित से बरसादे तू ॥
आजा,आजा,आजा जल्दी, जल्दी आ मैं हूँ चेरा ।
आजा दरश दिखाजा प्यारे करजा कभी इधर फेरा ॥
(२) रात भयानक अति अंधियारी, दूर देस सब आ निकले ।
आंधी बही भर्म संशय की, सत्त असत्त न कुछ सूझै ॥
भंवर घनेरी टूटी नैया, खेवट मग मारग भूले ।

बरसे नीर अखंडित धारा,जिया देखन को बहु तरसै ।।
भवसागर इक अगम पंथ है, टूटी नाव टूटा बेरा ।
आजा, दरस दिखाजा,प्यारे,करजा कभी इधर फेरा ।।

(३)तुझ बिन चैन न आवै मन को,व्याकुल चितहोय घबराऊं ।
बिरह का बान लगा अतिकारी,चोट कलेजे क्या खाऊँ ।।
दरस दिखादे पीर मिटादे,तुझ पर मैं बल बल जाऊँ ।
कोई उपाय न सूझै मुझ को जिससे मैं तुझको पाऊँ ।।
राधास्वामि के रूप में आजा, मन मंदिर में कर डेरा ।
आजा दरस दिखाजा प्यारे, करजा कभी इधर फेरा ।।

(५२)

१—चमका घट भक्ति का तारा धनि धनि धनि राधास्वामी ।
जीते जी अब भव जल पारा धन धन धन राधास्वामी ।।
२-नहिं काम क्रोध का भय मन में,नहिं रोग सोग व्यापा तन में ।
हुआ करम भरम से मैं न्यारा । धन धन धन राधास्वामी ।।
३—दुविधा न रही चिन्ता न रही,माया न रही ममता न रही ।
सतगुरु मेरा होगया रखवारा,धन धन धन राधास्वामी ।।
४-जब आँखखुली तब पहिचाना,गुरुगम गति लखि मननेमाना
भरमू नहिं सुख घर परिवारा,धन धन धन राधास्वामी ।
५—सुरत भाग्यवती नभ चढ आई,गुरु मूरत ने छबि दरसाई ।
धुर पद का खुला घट में द्वारा,धन धन धन राधास्वामी ।।

(५३)

नाम सुमिर प्यारे भाई नाम में भलाई (टेक)

(१) नाम काम क्रोध मारे, नाम कष्ट विपति टारे ।
नाम पतित जीव तारे नाम है सुखदाई ।

(२) नाम ज्ञान नाम ध्यान नाम भक्ति मुक्ति खान ।
नाम शक्ति है महान सुमिर लौ. लाई ॥

(३) तीरथ व्रत जप को छोड़ भरम मोह नाता तोड़ ।
चित को नाम से ले जोड़ सहज नाम गाई ॥

(४) भाव हो चाहे कुभाव नाम ही से मन लगाव ।
यह ही सच्चा है उपाय काम ले बनाई ॥

(५) कान आंख होंठ बन्द नाम सुमिर मेंट द्वन्द ।
काट काल कर्म फंद सत संगत जाई ॥

(६) नाम का समाज साज नाम करे पूरा काज ।
नाम सुमिर सुमिर आज क्या है कठिनाई ॥

७–राधास्वामी नाम ज्ञान नाम शब्द और प्रमान ।
अन्तर भज घट में आन बिगड़ी ले बनाई ॥

(५४)

(१) तेरी दया हो मुझ पर मेरे कृपाल दाता ।
रखकर शरन में अपने करदे निहाल दाता ॥

(२) तेरी दया की दृष्टि से पार जाऊंगा मैं ।
भव सिन्धु में पड़ा हूँ उससे निकाल दाता ॥

(३) लम्पट हूँ मोह मद में बुद्धि नहीं ठिकाने ।
फैला के हाथ अपना मुझ को सँभाल दाता ॥
(४) बे पीर काल निस दिन यों ही सता रहा है ।
उससे बचाले मुझ को तू बाल बाल दाता ॥
(५) गुरु पूरे राधास्वामी तेरा ही आसरा है ।
चहुँ ओर में तना है माया का जाल दाता ॥

(५५)

नर जन्म न बारंबार कछु समझ सुरत सखी मन में (टेक)
१–दिन दस का रहना है जगमें, क्यों तू पड़ी खर कूकर खग में
आयु बिताई डाकू ठग में, चित से सोच विचार ।
२-चलना है नहिं रहना सजनी। अब करले परमारथ करनी ॥
भव निधि की यह सहज है तरनी, भव का वार न पार ॥
३–सतगुरु की लेले शरनाई । तजदे आलस और कदराई ।
जितनी बने उतनी हो कमाई, जीवन को ले सुधार ॥
४–सुरत शब्द साधन को चितदे, जस कीरति जीते जग ले ।
फिर पछिताये क्या होय तेरे, महा कठिन संसार ॥
५--राधास्वामी सुमिर२ राधास्वामी, राधास्वामी घट२ अंतरयामी ।
राधास्वामी पद में कोट प्रनामी, राधास्वामी है तेरे रखवार ॥

(५६)

गुरु संग नेह लगावरी मेरी सुरत स्यानी । टेक
१–सुमिरन भजन ध्यानकर चित से, मोक्ष पदारथ पाव री ।

२–गुरु का रूप बसा तेरे अन्तर, उस पर वृति जमाव री ॥
३–लख लख अलख दशा घट भीतर, अनहद धुनि नित गावरी
४–सुमिरन सबका सार है प्यारी, सुमिरन सहज उपावरी ॥
५–ध्यान गुरु का रूप है सजनी, रूप अनूप को ध्यावरी ॥
६–नाम का नाद गूंज रहा अंतर, सुन सुख आनन्द पावरी ।
७–दुख को त्याग हर्ष नित बाढ़े, उसकी चाह बढ़ावरी ॥
८–भँवर में जीवन नाव पड़ी है, तट पर उसको लावरी ।
९–राधास्वामी गुरु का दया भाव ले, चरण शरण में आवरी ॥

(५७)

१–है सुफल नर जन्म उसका, जो लगा है काम में ।
काम की जड़ है छुपी, गुरु देव जी के नाम में ॥
२–चलते फिरते जागते सोते, समाधी हो लगी ।
भूलने पाये न गुरु का नाम, आठों जाम में ।
३–प्रेम भक्ति की कमाई में, लगे हैं भक्त जन ।
यह न समझो मन लगा है, जगत के धन धाम में ।
४–टूट जाये लंक गढ़, रावण का भय जाता रहे ।
मानसिक फुरना यह ही है, अब तो रमता राम में ।
५–हम हुये सेवक, हमारा धर्म सेवा बन गया ।
सेवा रह कर करते हैं हम, राधास्वामी धाम में ।

(५८)

१–तेरे घट में बिमल बहार, बाहर ना जारे ।
घट में तेरे खेत क्यारी, घट में खुला बजार ॥

२–निरख परख लख घट की लीला, अन्तर सोच विचार ।
बाहर मुख बन उमर गँवाई, अन्तर मुख चित धार ॥
३–भीतर बाहर सम करले तू, हो जीवन उद्धार ।
अन्तर में तेरे सूरज चंदा, झलके जोत अपार ॥
४–शब्द नाद गूंजे घट भीतर, अनहद धुन झनकार ।
राधास्वामी जोग की महिमा, कोई न बरने पार ।

(५९)

जल कैसे भरूँ औंधी गगरी । (टेक)
१-औंधा पर्वत औंधा कुआँ है, औंधे भापका औंधा धुआं है ।
औंधा देश औंधी नगरी । जल कैसे···
२–पेड़ एक जड़ रहे अकासा, नीचे दिशा में फूटी शाखा ।
है बगिया औंधी सगरी । जल कैसे···
३–ऊँचे जड़ नीचे फल लागे, देख अचंभा बुधि सुधि भागे ।
उलटे धरे कोई पगरी । जल कैसे···
४–उल्टी जमुना उलटी गंगा, उलटा सत उलटा सतसंगा ।
पथ की उलटी है डगरी । जल कैसे···
५-राधास्वामी उलटी राह लखावें, सुरत शब्द मतभेद बतावें ।
चलो संभाल अपनी मगरी । जल कैसे···

(६०)

तेरी दया का दृढ़ विश्वास हुआ चरणों में पड़ निज दास हुआ
१-करूँ विनती दोऊ कर जोरो, अरज सुनो राधास्वामी मोरी ।

संसार से सहज उदास हुआ ॥१॥
२-सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता,सब जीवन के पितु और माता।
ढारस बाँधी, घट में उजास हुआ ॥२॥
३-दया धार अपना कर लीजे, काल जा से न्यारा कीजे।
तब समझूँगा माया का नाश हुआ ॥३॥
४-सतयुग त्रेता द्वापर बीता,काहु न जानी शब्द की रीता।
सब में अज्ञान का बास हुआ ॥४॥
५-कलयुग में स्वामी दया बिचारी,परगट करके शब्द पुकारी।
मिला सत,ज्ञान का भास हुआ ॥५॥
६-जीव काज स्वामी जग में आये,भवसागर से पार लगाये।
तब दुखी जीव सुखरास हुआ ॥६॥
७-तीन छोड़ चौथा पद दीना,सत्तनाम सतगुरु गति चीन्हा।
अनुभव का आप विकास हुआ ॥७॥
८-जगमगा जोत उजियारा,गगन सोत पर चन्द्र निहारा।
घट ब्रह्म रेन्द्र कैलाश हुआ ॥८॥
९-सेत सिंहासन छत्र बिराजै,अनहद शब्द गैब धुन गाजै।
हिया उमगा हर्ष हुलास हुआ ॥९॥
१०-क्षर अक्षर निःअक्षर पारा,बिनती करे जहां दास तुम्हारा।
पृथ्वी छुटी गुज़र अकास हुआ ॥१०॥
११-लोक अलोक पाऊँ सुखधामा,चरन शरन दीजे विश्रामा।
राधास्वामी चरन निवास हुआ ॥११॥

(६१)

(१) लेता हूँ नाम तेरा, दाता दयाल है तू ।
कर अब सँभाल मेरी, मेरी संभाल है तू ॥
(२) तेरी दया हुई जब, फिर काल का भरम क्यों ।
यह मैंने समझा मन से सच्चा कृपाल है तू ॥
(३) संशय नहीं कि बहका, था जग की भ्रांति से ।
व्यापक हृदय में स्वामी, अब बाल बाल है तू ॥
(४) दिन रात ध्यान सुमिरन, दिन रात का भजन है ।
मेरा श्रवण मनन तू, और मेरी चाल है तू ॥
(६) गुरु पूरे राधास्वामी, तुझ से लगन लगी है ।
करदे निहाल मुझ को, समझा निहाल है तू ॥

(६२)

(१) मैं पतित ठहरा तभी तू पतित पावन बना ।
डूबा भव सागर में मैं तब तू तरन तारन बना ॥
(२) जो न होता जग में रावण कैसे आते रामचन्द्र ।
कंस ने परगट किया, मथुरा में कृष्णानंद कंद ॥
(३) जो सुखी है उनको तेरे नाम की चाहत नहीं ।
जो भले हैं उनको तेरे नाम की चाहत नहीं ॥
(४) पाप जब मैंने किया, तब तू हुआ परगट यहाँ ।
मैं न करता पाप, तुझ को जानता कोई कहाँ ॥
(५) पापियों के तारने वाले, हमारा ध्यान कर ।

करते हैं सब हमसे घृणा हमको पापी जानकर ॥
(६) अच्छे लोगो भागते हो क्यों हमारे नाम से ।
कैसे कतराकर चलते हो तुम हमारे काम से ॥
(७) ज्ञान का अज्ञानियों को ही सदा अधिकार है ।
पापियों ही के लिये जग संत का अवतार है ॥
(८) सुख के सिर पत्थर पड़ें सुख ने भुलाया नाम को ।
दुख की बलिहारी है दुःख ही ने जपाया नाम को ॥
(९) मेरे दाता दीन और दुखियों की तुझको लाज है ।
दीन बन्धो ! दीन हित करना ही तेरा काज है ॥
(१०) अपनी निन्दा क्या करें निन्दा के कब हम पात्र हैं ।
सच्चे अधिकारी दया के जग के पापी मात्र हैं ॥
(११) पापी ही दर्शन दिलाते हैं तेरा संसार को ।
पाप करके वह बुझा देते हैं भक्ति सार को ।
(१२) द्वन्द में हमको फंसाया और पापी कर दिया ।
मन का बरतन बासनाओं से हमारे भर दिया ॥
(१३) सारे पापी तर गये आई है अब बारी मेरी ।
ताकता हूँ राह व्याकुलता से आने की तेरी ॥
१४–तर गये गणिका अजामिल भक्त शवरी भीलनी ।
तर गये सैना सदन तक और सुपच चंडाल भी ॥
(१५) मेरी बारी पर बता अब देर क्यों करने लगा ।
इस अधम को तार दे यह दुख से अब मरने लगा ॥

(१६) ऐ पतितपावन ! पतित की ओर हो दृष्टि तेरी।
ऐ तरन तारन ! नहीं होती है क्यों चिन्ता मेरी ॥
(१७) राधास्वामी अब दया से मेरा बेड़ा पार कर।
दुख सुख सहा करता हूँ निसदिन आके तू उद्धार कर ॥

(६३)

१–गुरु नाम में हिया जिया उमगाऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥
गुरु दरश पाय मन मगनाऊँ,
धन धन धन धन राधास्वमी ॥
२–गुरु रूप में दरश दियो जग में,
अपनाके कियो मुझको मग में ॥
तेरे चरण छोड़ नहिं कहीं जाऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥
३–तू दाता दीन दयाला है,
भक्तों का तू प्रतिपाला है ॥
तेरे चरण में तन मन बिसराऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥
४–तेरा सुमिरन ध्यान भजन नित हो,
तेरा श्रवण मनन निध्यासन हो ॥
धारूँ मन में तेरा रूप सदा,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥

५–राधास्वामी ने की है दया भारी,
गुरु चरण कमल पर बलिहारी ॥
गुरु बचन सुनूं और नित गाऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥

(६४)

१-राधास्वमी मत वह क्या समझे,जो निगुरा है अज्ञानी है।
सत तत्व सार वह क्या जाने,गुरु मत नहीं,नहीं गुरु ज्ञानी है
२-कोई लोक लाज में अटका है,कोई रीति रसम में लटका है
अज्ञान से उसने पकड़ी है,जो लोक में लीक पुरानी है ॥
३-बे ठौर ठिकने की भक्ति,क्या देती है सिद्धि शक्ति।
नहीं सूझी जोग जतन जुगती,निश्फल सब मानी गुमानी है
४-नहीं नाम की महिमा जो जाना,नहीं नामी पद को पहिचाना
तोते को रटन में अटकाना। सब भूल भरम भरमानी है।
५ जप तप में आयु गई सारी, रही संसारी का संसारी।
अपना भी नहीं वह हितकारी,यह लाभ नहीं है हानी है।
६-पहुँच नहीं नाम कोई पावे, ऊंचे चढ़ चौथा पद लावे।
तब नाम राग की धुन गावे,वह पृथ्वी नहिं असमानी है ॥
७-नरदेह की गति मति को जानो,जो कहताहूँ उसे पहिचानो।
निज अनुभव से अपने मानो,नहिं भरम की फांस फँसानी है ॥
८-हैं कर्म इन्द्री नीचे भाई, ज्ञान इन्द्री ऊंच जगह पाई।
मन बुद्धि से जब ऊँचे जाई,इस बिधि तुमको समझानी है ॥

९-तीनों से ऊँचे सुरत रहे, ऊँचे चढ़ कर वह शब्द गहे ।
इस शब्द में नाम का रूप लहे, यह नाम महा सुखदानी है ॥
१०-नीचे कहां नामका है बासा, चौथे पद बांध उसकी आसा ।
त्रलोकी में काल का है फांसा, यह मर्म तुझे जतलानी है ॥
११-कर शब्द सुरतका तू साधन, तब हाथ आवेगा नाम रतन ।
राधास्वामी जोग का सीख जतन, जो हो नहीं भर्म भुलानी है ॥

(६५)

(१) आया तेरी शरन में रख मेरी लाज प्यारे ।
तेरी दया से पूरा हो मेरा काज प्यारे ॥
(२) भक्ति का आसरा हो भक्ति दे अपनी मुझको ।
हित चित से मैं सजाऊँ भक्ति का साज प्यारे ॥
(३) तुझ में है सारी शक्ति तुझ में है योग युक्ति ।
दुख से दिलादे मुक्ति तेरा है राज प्यारे ॥
(४) जब आगया शरन में दुख दूर करदे मेरा ।
कल का भरोसा क्या है कर काम आज प्यारे ॥
(५) गुरु दाता राधास्वामी तेरा ही आसरा है ।
आया शरण में तेरे सब जग से भाग प्यारे ॥

(६६)

राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥
(१) राधास्वामी दिवसम राधास्वामी रैनम ।

राधास्वामी सैनम, राधास्वामी वैनम ॥
राधास्वामी भजो आठों जामी ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥

(२) राधास्वामी पित्रम् राधास्वामी माता ।
राधास्वामी करता धरता विधाता ॥
राधास्वामी पद में विसरामी ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥

(३) राधास्वामी विद्या राधास्वामी द्रव्यम ।
राधास्वामी मूलम राधास्वामी सर्वम ॥
राधास्वामी मेरे अन्तरयामी ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥

(४) राधास्वामी सत्यम् चित्या नन्दम ।
राधास्वामी गुप्तम राधास्वामी विदिनम ॥
राधास्वामी सुमिरो निह कामी ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥

(५) राधास्वामी शुद्धम नित्त विमुक्तम् ।
राधास्वामी ज्ञान भक्ति संयक्तम् ॥
राधास्वामी अनाम राधास्वामी नामी ।
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥

(६७)

गुरु गह कर हाथ सम्भालो मुझे ।

भव जा फंसा हूँ निकालो मुझे ॥

(१) पांच शत्रु पीछे पड़ें करें सदा उत्पात ।
तुम मेरी रच्चा करो,देकर नाम की दात ॥
समरथ गुरु उनसे बचालो मुझे ॥१॥

(२) दीन अधीन मलीन चित,चंचल मूंढ कुचाल ।
गुरु दाता दुख भंजना, काटो यह जंजाल ॥
हूँ मौत के मुँह में जिलालो मुझे ॥२॥

(३) एक तुम्हारी आस है, आस किसी की नाँह ।
शक्ति नहीं असक्त हूँ, पकड़ो मेरी बाँह ॥
पद कमल की छांह में पालो मुझे ॥३॥

(४) मेरे चित्त में नित बसे, रखकर अपने संग ।
हिया जीया में बाढ़ सदा, प्रेम प्रतीत उमंग ॥
भव भय के भंवर से उछालो मुझे ॥३॥

(५) विनती कब तक मैं करूँ आयू बीती जाय ।
राधास्वामी दीन हित अब तो करो सहाय ॥
दुखदायी दशा से हटालो मुझे ।४॥

(६८)

पहुँचा दो प्रेम नगरिया जी,मैं तो भूल गई हूँ डगरिया जी।

(१) चलत चलत थक थक गई, और न सूझे छोर ।
कहां को चली हूँ सुध नही, बहका मन चितचोर ॥
रस्ते में पांग रगरिया जी । पहूँचा दो प्रेम······

(२) चलते २ दिन गया, सांझ आई और रात।
कहां ठहरूं जाऊं कहां, समझ न आवे बात॥
हो सके तो कर दो उजरिया जी। पहुँचा दो प्रेम…

(३) मैं तुमको भूली नहीं भूली अपनी देह।
ऐसी भूली सुध नहीं कहां ग्राम कहां गेह॥
तुम कैसे मुझ को विसरिया जी। पहुँचा दो प्रेम…

(४) नाम तुम्हारा होट पर, मन में तुम्हारा ध्यान।
देह पड़ी है पंथ में, निकट तुम्हारे प्रान॥
क्या कहूँ जो मुझ पै गुजरिया जी। पहुँचा दो प्रेम…

(५) भूखी प्रेम के स्वाद की, प्यासी प्रेम के नीर।
प्रेम ज्ञान गुरु दीजिये, जो तुम धीर गम्भीर॥
भरो घट की प्रेम नगरिया जी। पहुँचा दो प्रेम…

(६) पंथ में नंगे पांव हूँ दुख से रही घबराय।
काँटा लागा विरह का, तड़प तड़प अकुलाय॥
क्यों लेते नहीं हो खबरिया जी। पहुँचा दो प्रेम…

(७) राधास्वामी इष्ट पद, धुरपद सर्वाधार।
कब पहुँचूंगी चरन में, भव के दुख सुख टार॥
भोगूंगी सत की सिजरिया जी। पहुँचा दो प्रेम…

(६६)

घट का पट खोल दिखादो पिया।
दर्शन के लिए है खड़ी दुखिया॥

१–दरशन की है लालसा, आई लगाये आस।
सहस्र नेत्र देखूं तुम्हें, मुझे न करो निरास॥
दरशन बिन तड़पे मेरा जिया। घट का पट···
२–हृदय का दीया किया, बाती नस के तार।
तेल बनाया लहू का, अब पाऊँ दीदार॥
उमगा उमड़ा है विकल हिया। घट का पट···
३–चित की खट पट मिट गई, चंचलता गई भाग।
रात अँधेरी बिरह की, काटूं पल पल जाग॥
दुखिया को अबतो करो सुखिया। घट का पट···
४–खुली आँख से दरस दो, आवो सनमुख आज।
तुम तो दीन दयाल हो, राजों के महाराज॥
इस जगत में तुम सब के मुखिया। घट का पट···
५–राधास्वामी सतगुरु अधिष्ठान आधार।
क्यों नहीं होते हो प्रगट निरखूं नैन उघार॥
नहीं जानूँ मैं नकी दूआ तीया। घट का पट···

(७०)

निज दरस दिखादो अपना पिया, मेरा तरस रहा है बहुत जिया
१–आंखों में झाईं पड़ीं राह निहार निहार।
जिभ्या में छाले पड़े नाम पुकार पुकार॥
किसने कभी जपतप ऐसा किया। निज दरस···
२–सहस्र नेत्र देखूँ तुम्हें, सहस्र कमल भ्रूमध्य।

सहस्त्र जोत निरखत रहूँ, दोऊ आंख कर बन्द ॥

दर्शन बिन नित अकुलाय हिया । निज दरस···

३–त्रकुटी चढ़ छवि को लखूं लाल का अपने रूप ।

अँखियन में लाली खुबे ओंम ओंम कहूँ भूप ॥

लाली जोति का बालूँ दिया । निज दरश···

४–सुन्न सरोवर स्नान कर, चन्द्रकार मुख लेख ।

तन मन बुद्धि चित खोरहे, रूप तुम्हारा देख ॥

तब मानूंगी दर्श का चैन लिया, । निज दरश···

५–अंखियां एक टक घूम रहीं अंशा अंशी समान ।

भंवर गुफा सोहंगमा, सोहंग सोहंग भान ॥

अब दर्श अमी रस घोल पिया । निज दरश···

६–देख लिया भ्रांति गई, सत सरूप तुम पीव ।

भर्म मिटादो एक का, नहीं ब्रह्म नहीं जीव ॥

राधास्वामी ने मेरा उपकार किया । निज दरश···

७–अलख अगम अद्वैत तुम, अकह अपार महान ।

अकथ कथा विचार कर, चुप हुई सुरत सुजान ॥

राधास्वामी ने हिये का टांका सिंया । निज दरश···

(७१)

मैंना मैंना रे मैंना तन पिंजड़े में, रहकर बोली बोले रे मैंना ॥

मैना मैंना रे मैंना, मैंना तन पिंजड़े में ।

रहकर बोली बोले रे मैंना ॥

१–जब लग मैं है तब लग तू है, मोर तोर का झगड़ा।
मैं जब गया गया जब तू भी. अब किस का रगड़ा ॥
सतगुरु दीने सैना। मैना तन पिंजड़े···

२–जो तू कहता वह अंधा है, मैं कहता दीवाना।
मैं मैं तू तू को जो छोड़े, वही है चतुर सयाना ॥
यह हैं सच्चे बैना। मैंना तन पिंजड़े···

३–जब मैं हूँ तब गुरु नहीं हैं, गुरु जब हैं मैं नाहीं।
प्रेम की गली तंग है भाई, दोनों कैसे समाहीं ॥
दोनों रहते हैं ना। मैंना तन पिंजड़े···

४–मोर तोर माया की रसरी, प्राणी फाँस फँसाने।
तोड़ के रसरी हो गये न्यारे, फिर नहिं वह भरमाने ॥
हो गये सच्चे मैंना। मैंना तन पिंजड़े···

५–बकरी मैं कह गला कटावे, मैं मैं कर मिमयावे।
मैंना मैंना बचन सुनावे, बेसन शक्कर खावे ॥
मैं-ना मैं-ना कैसी मीठी है मैंना। मैंना तन पिंजड़े···

६–मैंना मैंना मैंना बोले, बोल की रटन लगावे।
मैं को त्याग शांत बन जावे, सुख आनन्द धुन गावे ॥
पावे नित्त चैना, मैंना तन पिंजड़े···

७–मैं-तू-भ्रम विकार है मन का, मन माया का साथी।
जो मैं कहेगा दुख से मरेगा, कुचले अहम का हाथी ॥
मैं-तू-दोनों हैं ना–मैंना तन पिंजड़े···

८–सुरत की पच्ची मैंना बनकर, मैं-ना मैं-ना कहती।
सुन्न वृत्त की डाल पै बैठी, दुख सुख अब नहीं सहती ॥
दिन नहिं जहां रैना। मैंना तन पिंजड़े···

९–मैं-ना-मैं-ना तूना तूना, यह सतगुरु की बानी।
बानी सुन सुन जो चित लावे, बने सहज निरबानी ॥
माया फिर कभी व्यापे ना। मैंना तन पिंजड़े···

१०–राधास्वामी शब्द सुरत की, धुन गा गा के सुनावे।
जो गावे नित गाके सुनावे, भव पिंजड़े नहिं आवे ॥
वह बन जावे मैंना। मैंना तन पिंजड़े···

(७२)

जिस रहनी में मालिक राज़ी वह तो रहन कुछ और ही है।
मन के मन में मिलें जो स्वामी वह तो लगन कुछ और ही है ॥

१–ना मिलता प्रभु पहन जनेऊ, ना सुन्नत करवाने से।
ना मिलता वह मूंड़ मुड़ाये सिर पर जटा बढ़ाने से ॥
जिस रहनी में मालिक राज़ी वह तो रहन कुछ और ही है।
मन के मन में······

२–कोई तो जाते पूरब पच्छिम, कोई तो जाते हैं दक्खिन।
कोई २ साधू भला लो एक जुग रहें ढाड़े आसन ॥
जिस रहनी में······मन के मन में···

३-कोई करे जल सिज्जा का रब्त और कोई तो तपते पंच अगन
कोई चढ़ावें बज्र लँगोटी कोई तो रहते हैं लो नगन

जिस रहनी में······मन के मन में···
४-ना मिलता वह घर को त्यागे घर घर अलख जगाने से।
ना मिलता बागम्बर ओढे सिर पर जटा बढ़ाने से ॥
जिस रहनी में······मन के मन में···
५-मन को मारो फिर जग जीतो मन का मिले न फेर बाबा।
मन का मनका फेर कर उस मन के को लेउ बाबा ॥
सूरजगिर फक्कड़ यों कहें कविता की कथन कुछ और ही है।
मन के··

(७३)

सजनवा जाहि छिपे कौनी ओर।

१-रैन अँधेरी सब जग छाई, गरजे घटा सिर अति घनघोर।
बिन तुम भेटे कल न पड़त है, डरत रहे जिया मोर ॥१
२-दुष्ट विरोधी बहु किलकारें, बहुत मचावें अपना शोर।
मैं अति दुर्बल दीन अधीनी, नचित पौरष ना कुछ ज़ोर ॥२
३-रैन दिवस रहूं हिये घबरानी, डरप डरप निरखूं तुम ओर।
नाम सम्हारा लेउँ सँभारी, चरनन में चित राखूं जोड़ ॥३
४-या बिधि मुश्किल मोहि पड़ी है, अर्ज सुनो मेरी बंदीछोड़।
दयाल नाम तुम सदा धरावा, अब क्यों भये तुम दयालकठोर।४
५-दीन दुखी की बिनती सुनिये, हे राधास्वामी मेरे चितचोर।
दया महर निज हिये उमगाओ, दर्शनदे मोहि करोसरबोर।५

(७४)

तुम्हें चिन्ता नहीं है क्या मेरी,जो दया में ऐसी हुई देरी ।

१–दिन को सुख आनन्द नहीं, नींद न आवे रात ।
दबा हृदय छाती फटे, कैसे कहूँ कुछ बात ॥
चहुँ ओर से बिपता ने लिया घेरो । तुम्हें चिंता···

२–रात गई दिन भी गये, बीते वर्ष और मास ।
पिया निर्दई न दया करे, किसकी राखूं आस ॥
मेरे पांव पड़ी दुख की बेड़ी । तुम्हें चिंता···

३–आँखों से आंसू बहें, जैसे मेघ की धार ।
तड़प तड़प तड़पी बहुत,तड़प का वार न पार ॥
कोई मुझसी दुखी नहीं जग हेरी । तुम्हें चिंता···

४–तड़पे जल से बिछुड़ कर, जैसे निरजल मीन ।
तैसी ही गति है मेरी, होगई दीन अधीन ॥
हो विकल करूँ हेरा फेरी । तुम्हें चिंता···

५–गीली लकड़ी आग में, पड़ी सदा धुन्धयाय ।
जली बरी जल बर मरी,बचन का कौन उपाय ॥
हुई राख की भारी मैं ढेरी । तुम्हें चिंता···

६–राधास्वामी परमहित, दया दृष्टि से देख ।
मेटो दुखदाई दशा, कटे कर्म का लेख ॥
गुरु अब तो दर की बनी चेरी । तुम्हें चिंता···

(७५)

सइयां बेदरदी रे मेरी सुध लेत नहीं !

१–तरसूं तड़पूं पिया तुम कारन तुमको मुझसे हेत नहीं ।

२–अँखियन नीर बहे जल धारा तन मन का कुछ चेत नहीं ।

३–दरश दिवानी को दर्शन दीजे सब कुछ लीजे सेंत नहीं।

४–विरह की पीर कलेजे साले रैन दिवस कल देत नहीं ।

५-भव निधि राधास्वामी नामका बेड़ा तरने को कोई सेत नहीं ।

(७६)

मेरे घट की क्यारी हरी रहे । क्यों हरी अकेली भरी रहे ।

(१) खिलै गुलाब प्रतीत का, सोभा क्यारी दे ।
फैले सुगन्धि प्रेम की, सब कोई आनन्द ले ।।
अंखियन को शरद की तरी रहे । मेरे घट की···

(२) चम्पा दया का फूल दे, फूल दया के फूल ।
भ्रम का भौंरा सन्निकट, कभी न आवे भूल ।।
फूलों की निरंतर झारी रहे । मेरे घट की···

(३) सेवती केतकी मोतिया, शान्ति जूही कून्द ।
एक रूप भासें सदा, मेट कुरंगी द्वन्द ।।
सम दृष्टि चमेली खरी रहे, मेरे घट की···

(४) भक्ति अनार में फूल लगे, फूटे लाली नित्त ।
बिगसें कमल उमंग के, देख के उमगे चित्त ।।
माया की बेली मरी रहे, मेरे घट की···

(५) सुरत मालिनी गूंध कर, लाये भाव का हार ।
हर्षे आनन्द सुख लहे, राधास्वामी गले डार ।
दुष्कर्म कटीली जरी रहे । मेरे घट की...

(७७)

१-खेलो खेलो रुत आई बसंत । बसो प्रेम बास मिल साध संत
२-फूले बन में टेसु अनन्त, नहीं कुसुम फूल का आदि अंत ॥
३-आनन्द मिला घट लखा कंत, सुरत सखी शब्द संग सुख करंत
४-रुत बसंत है प्रेम पंत, नहीं जाने मतवाला महंत ।
५-राधास्वामी दया ले जीव जन्त ।
अब नहीं भव दुख निधि जल परंत ॥
दोहा-प्रेम बास से जो बसे सोई बसंत कहाय ।
बसे जो निकट में संत के वह बसंत सुख पाय ॥
यह बसंत के अर्थ दो समझे साध सुजान ।
यही अर्थ है मुख्य कर दूजा गौन समान ॥

(७८)

राजों के महाराज तुम मेरे सतगुर स्वामी !
हित अनहित सबके हितकारी प्रगटे जिनके काज तुम । मेरे०
परमारथ के कारन आये साज के संत समाज तुम ॥ मेरे०
दुखियों का मेटो दुख दारुन रख लो उनकी लाज तुम । मेरे
ज्ञानी धानी ऋषि मुनि देवा सबके हो सिरताज तुम । मेरे
राधास्वामी परम दयाला चरन शरन दो आज तुम ॥ मेरे

(७६)

होरी बिरज में कैसी मचोरी।

१–यह बृज भूमि बृज का मंडल अद्भुत साज सजोरी।
नन्द आनन्द जसुधा प्रकृति घर मन कान्हा प्रगटो री॥
२–इन्द्री गुप्त गोपी संग मिल जुल रास बिहार रचो री।
सुरत सार माखन रस चाहे नित प्रति उठ करे चोरी॥
३–जमुना कर्म धर्म की धारा विटप विराट लखोरी।
चीर हरी गोपिन की सारी कदम के गाछ चढ्यो री॥
४–सखा गोप ले ग्वाल मंडलि कर्म खेल बिनसो री।
कालीदह में गैंद गिरी जब उछल के कूद परोरी॥
५–विषधरनाग मलिन मन की गति फन पर अभय चढ़ोरी।
बंसीवट बंसी धुन गा गा थिरक थिरक नाचोरी॥
६–राधा सुरत के रूप पे मोहा अंग संग अपने कियो री।
मथुरा नगर कंस अज्ञाना ताहि मार नासो री॥
७–कर अज्ञान का नाश कृष्ण सोई दसम द्वार पहुँचो री।
'का' है बृह्म द्वार दरवाज़ा द्वारका जाय धंसोरी।
८–सोहं सोहं मुर्ली बजावे सोहं धाम लयो री।
ओ३म के ऊपर सोहं की गति भँवर गुफा मचलो री॥
९–यह होरी बृज भँवर की होरी कोई कोई साध कह्योरी।
राधास्वामी संग सार हम पाया सत पद खेल गयो री॥

(८०)

होली

१–मैं तो होरी खेलन को ठाड़ी,स्वामी प्यारे झटपट खोलो किवाड़ी ।
२–प्रेम रंग की वर्षा कीजे, भीजे सुरत हमारी ।
३–देर देर बहु देर हुई है, कहां लग करूँ पुकारी ।
४–तड़प तड़प जिया तड़प रहा है,दर्शन देउ दिखारी ।
५–सुन्दर रूप लखूं अद्भुत छबि, होवे घट उजियारी ।
६–ऋतु फागुन अब आय मिली है,नई २ फाग खिलारी ।
७–राधास्वामी परम दयाला, चरन लेउ मिलारी ।
८–विनती करूँ दोऊ कर जोरी, करलो प्रेम दुलारी ।

(८१)

रंग दे चुनर मोरी रंगरेजवा ।

शब्द सुरत का ताना बाना सुरत चुनर मोरी कोरी । रंग०
चुन्नट दे दे गोट लगादे कस दे शब्द की डोरी । रंग०
पइयां परूंगी गुन मानूंगी स्तुति करूँगी तोरी । रंग०
प्रीत के कुंड प्रेम रंग भर बोर के दे झकझोरी । रंग०
ठुमक २ पिया के घर जाऊँ माया काल की चोरी । रंग०
ऐसी सजीली चूनर निकसे कोई करै न ठठोरी । रंग०
पहर ओढ़ राधास्वामी रिझाऊँ खेलूं भक्ति की होली । रंग०

(८२)

दोहा–राधास्वामी नाम, जो गावै सोई तरै ।
कलि कलेश सब नाश,सुख पावै सब दुख हरै ॥

ऐसा नाम अपार, कोई भेद न जानई।
जो जानै सो पार, बहुरि न जग में जन्मई ॥२
राधास्वामी गाइ कर, जन्म सुफल करि लेइ।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धरि लेइ ॥३
बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरख निहार।
और न कोई लखि सकै,शोभा अगम अपार ॥४
गुप्त रूप जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम।
बिना मेहर नहिं पावई जहां कोई बिसराम ॥५

॥ चौपाई ॥

करूँ बंदगी राधास्वामी आगे। जिन परताप जीव बहु जागे ॥
बारंबार करहुँ परनाम। सतगुरु परमधाम सतनाम ॥
आदि अनादि जुगादि अनाम। संत सरूप छोड़ि निज धाम ॥
आये भव जल नाव लगाई। हमसे जीवन लिया चढ़ाई ॥
शब्द दृढ़ाया सुरत बताई। करम भरम से लिया बचाई ॥

दोहा—कोटि कोटि करूँ बंदना,अरब खरब दण्डौत।
राधास्वामी मिल गये, खुला भक्ति का सोत ॥

॥ चौपाई ॥

भक्ति सुनाई सबसे न्यारी। वेद कतेब न ताहि बिचारी ॥
सत्त पुरुष चौथे पद बासा। संतन का जहां सदा विलासा ॥
सो घर दरशाया गुरु पूरे। बीन बजै जहां अचरज बूरे ॥
आगे अलख पुरुष दरबारा। देखा जाय सुरत से सारा।

तिस पर अगम लोक एक न्यारा । संत सुरत कोई करत विहारा
तहां से दरसैं अटल अटारी । अद्भुत राधास्वामी महल संवारी
सुरत हुई अति कर मगनानी । पुरुष अनामी जाय समानी ॥

(८३)

राधास्वामी नाम की बलिहारी । गुरु नाम महा मंगलकारी ॥
१–राधास्वामी नाम को, जो गावे तर जाय ।
कल कलेश सब नाश हों, दुख मेटे सुख पाय ॥
इस नाम की महिमा है भारी । राधास्वामी नाम की बलिहारी
२–ऐसा नाम अपार यह, भेद न कोई जान ।
जो जाने सो पार है, जग नहिं जन्मै आन ॥
मिलती है बंध से छुटकारी,राधास्वामी नाम की बलिहारी ।
३–राधास्वामी गाय कर, जन्म सुफल कर लेय ।
यही नाम निज नाम है, मन अपने धरि लेय ॥
नहिं कृत्रिम नामहो हितकारी,राधास्वामी नामकी बलिहारी ।
४–राधा सुरत का मूल है, स्वामी शब्द का मूल ।
निज सरूप के बृक्ष में, डाल पात फल फूल ॥
यह नाम नहीं है संसारी, राधास्वामी नाम की बलिहारी ।
५–बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरखनी हार ।
और न कोई लख सकै, शोभा अगम अपार ॥
निज सुरत है शब्दकी दरबारी,राधास्वामी नामकी बलिहारी ।
६–गुप्त रूप जहां धारिया, राधास्वामी नाम ।

बिना मेहर नहिं पावई, जहां कोई विश्राम ।।
बड़भागी कोई हो अधिकारी,राधास्वामी नाम की बलिहारी ।
७–अलख अगम अनाम का, राधास्वामी नाम ।
तिरलोकी के है परे, राधास्वामी धाम ।।
वहाँ रंग न रूप न रेखारी,राधास्वामी नाम की बलिहारी ।

(८४)

नमो सतगुरुम् सच्चिदानन्दरूपम् ।
नमो अद्भुतम् अद्वितीयम् अनूपम् ।।१
नहीं रूप कोई हैं सब रूप तेरे ।
तेरी सब ही परजा हैं और भूप तेरे।।२
धरा सन्त औतार जग को चिताया ।
दुखी दीन को अंग अपने लगाया ।।३
दिया संग सतका मिला सतका जीवन ।
तेरे नाम पर शीश तन मन है अर्पन ।।४
झुके राधास्वामी चरन हँसते हँसते ।
तुझे कहते हैं सब नमस्ते नमस्ते ।।५

(८५)

तेरी स्तुति हित चित से गाऊँ ।
धन धन धन धन राधास्वामी ।।
तेरे ध्यान में हिया जिया उमगाऊँ ।
धन धन धन धन राधास्वामी ।।

गुरु रूप में प्रगट हुआ जग में,
जीवों को चिता के किया मग में।
है विनय तेरा दरशन पाऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥२

मङ्गलमय मंगल की खानी,
मंगल स्वरूप मंगल दानी।
छिन प्रति छिन मैं तुझ को ध्याऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥३

तू सब में है सब से न्यारा,
तेरा रूप लगै अति ही प्यारा।
तेरा चरन छोड़ि नहिं कहीं जाऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥४

तू निस दिन मेरे मन में बसे,
अब मन नहिं माया मोह फँसे।
राधास्वामी नाम जप हर्षाऊँ,
धन धन धन धन राधास्वामी ॥५

(८६)

हमें भी दे तार लाखों तारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी।
लगा दे भव जल के अब किनारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी॥
न हो किसी से हमारा नाता, न हम किसी का सहारा ढूँढ़ें।
सदा रहें तेरे ही सहारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी॥

न मोह माया का मनमें खटका,न काल और कर्म का हो झटका
निवास कर मन में अब हमारे,दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥३
प्रेम भक्ती का दान दे तू ,न हम को सन्मान मान दे तू ।
यही है बिनती हमारी प्यारे,दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥४
दे खोल दृष्टी तुझे पहिंचानें,दरश परस करके तुझको मानें।
उदय हों घट सूर चन्द्र तारे,दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥५
अलख अगम का दिखा तमाशा,दिलादे निज धाम में तू बासा
चरन कमल के रहूँ सहारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥६
जपूं सदा मन से राधास्वामी,कहूँ सदा मुख से राधास्वामी ।
दिखा दिला नाम धन दुलारे,दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥७

(८७)

आपके अर्पन है यह मेरा नहीं तन आपका ।
ले लो चरनों में लगालो मेरा है मन आपका ॥१॥
मेरा तो कुछ भी नहीं है जिस पै मैं ममता करूँ ।
आप ही का तन है मन है और है धन आपका ॥२॥
मन की चंचलता से क्यों हो दुख जो यह मेरा नहीं ।
जोग जुक्ती आपकी है और है साधन आपका ॥३॥
भूल थी मैंने जो समझा मेरे ही हैं देह मन ।
अबतो यह सर झुक रहा है और चरन है आपका ॥४॥
राधास्वामी मौज की अब तक न आई थी समझ ।
स्वामीपन है आपका और दासपन है आपका ॥५॥

(८८)

करूँ बीनती दोऊ कर जोरी अरज सुनों राधास्वामी मोरी ।
सत्तपुरुष तुम सतगुरु दाता, सब जीवन के पितु और माता ।।
दया धारि अपना कर लीजे, काल जाल से न्यारा कीजे ।
सतयुग त्रेता द्वापर बीता, काहु न जानी शब्द की रीता ।।
कलयुग में स्वामी दया विचरी, परगट करके शब्द पुकारी ।
जीव काज स्वामी जग में आये, भवसागर से पार लगाये ।।
तीन छोड़ चौथा पद दीना, सत्तनाम सतगुरु गत चीन्हा ।
जगमग ज्योतिहोत उजियारा, गगन सोत वर चन्द्र निहारा ।।
सेत सिंहासन छत्र विराजै, अनहद शब्द गैब धुन गाजै ।
छर, अछर, निहंअछर पारा, बिनती करै जहाँ दास तुम्हारा ।।
लोक अलोक पाउँ सुख धामा, चरन शरन दीजे विश्रामा ।

(८९)

गुरु दाता चरन की धूर मिलै ।।
करूँ धूर आँखों का अँजन । दिव्य दृष्टि भरपूर मिलै ।।१
सूझै अंड खन्ड ब्रह्मण्डा । निकट पदारथ दूर मिलै ।।२
खुले नैन से रूप निहारूँ, माया भरम सब धूर मिलै ।।३
सहज सहज में सहज सहज में, प्रेम भक्ति की मूर मिलै ।।४
राधास्वामीचरन की आश रहै नित सतपद का सत नूर मिलै ।।५

(९०)

गुरु प्यारे दरश दो मोहि अपना ।।

दर्शन बिन मोहि चैन न आवै,रात दिवस का है तपना ॥१
बाहर भीतर दर्शन दीजै, रहे नाम का नित जपना ॥२
अनुभव ज्ञान की खोल दो दृष्टी,भर्म का दूर करौ ढपना॥३
इन्द्रजाल संसार की लीला, जाग मिटै मेरा यह सपना ॥४
राधास्वामी दया दृष्टि हो,काल के भय से न हो कपना ॥५

(६१)

गुरु दाता मौज करौ आज नई ।

अमृत वचन धार बरसा दो, भव मण्डल हो सुधामई ॥१
सहज तरें सब भवसागर से, डूब रहे पापी कई कई ॥२
पतित उधारन पतित उधारो,नहीं नाम की लाज गई ॥३
भाग जगा जब दर्शन पाया, गुरू मिले अब भली भई ॥४
राधास्वामी द्वन्द अवस्था मेटो दृष्टि रहै नहिं प्रान रई ॥५

(६२)

मैं हूँ भोला भाला बालक, स्वामी तुम मेरे रखवार ।
सुमिरन भजन ध्यान नहिं जानूं, नहिं भक्ती का सार ।
तुम्हरी गोद मगन ह्वै खेलूं, खेल कूद से प्यार ॥१
ज्ञानी ज्ञान की बात सुनावें, ध्यानी ध्यान बिचार ।
मैं गुरु मूरति लख हरषाऊँ, क्यों व्यापै संसार ॥२
योग, विराग, नेम और संजम, इन से सरै न काम ।
कमल नीर सम मेरी रहनी, नहिं कोई हिये विकार ॥३
आया देखन जगत तमाशा, देखन का व्यौहार ।
उंगली पकड़ पिता की अपने, सिर पर धरूँ न भार ॥४

कथनी, बदनी, करनी त्यागूँ, रहनी के आधार।
मुझे सोच चिंता नहिं व्यापै, राधास्वामी की बलिहारी ॥५

(६३)

आस अब किस की करूँ, जब दास तेरा हो गया।
मैं हुआ तेरा तो तू भी, स्वामी मेरा हो गया ॥१॥
तू है मेरे साथ पल छिन, क्यों हो फिर चिंता कोई।
मेरे घट में जब तेरे रहने का डेरा हो गया ॥२॥
शीश पर तूने दया का, हाथ रख परिचै दिया।
मैंने समझा काल का, बस हेरा फेरा हो गया ॥३॥
जग नहीं स्थिर न स्थिरता, है जग की वस्तु में।
यह तो चिड़या रैन का, सचमुच बसेरा हो गया ॥४॥
राधास्वामी नाम का, सुमिरन है उठते बैठते।
नाम भव के सिंध के, तरने का बेड़ा हो गया ॥५॥

(६४)

तुझे कभी न बिसारूँ रे गुरुदाता।
बड़े भाग से दर्शन पाया, तन मन धन सब वारूँ ॥१॥
मैं तो तरा चरन लगि स्वामी, कुल कुटुम्ब भी तारूँ ॥२॥
जनम जनम रहे तेरी आशा, सकल बासना जारूँ ॥३॥
गुरु की टेक बसाऊँ चित में, काम क्रोध मद मारूँ ॥४॥
प्रगटै जोति नैन में मेरे, प्रेम दीप घट बारूँ ॥५॥
घट में ध्यान जमाऊँ गाढ़ा, तृष्णा मोह निकारूँ ॥६॥

राधास्वामी नाम का सुमिरन, चरन सरोज पखारूँ ॥७॥

(६५)

हमतो निश दिन गुरु रंग राते ।

गुरु की सेवा भजन बंदगी, कहीं न आते जाते ॥१

गुरु का बल ले गुरु की दया से, कर्म का फन्द कटाते ॥२

उठत बैठत कबहूँ न बिसरे, ध्यान गुरू का लगाते ॥३

जब जागें तब गुरु का सुमिरन नींद में गुरु संग पाते ॥४

खुली आँख गुरु मूरति निरखें, बन्द तो मन विचलाते ॥५

छिन छिन पल पल दरश दिखावा, दर्शन में मगनाते ॥६

राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, बल बल गुरु पर जाते ॥७

(६६)

आस कर गुरु की दया की, हो निराश न तू कभी ।

जो निराश हुआ समझ ले, गुरू का दास न तू कभी ॥१॥

जग के फंदों में पड़ा, समझा नहीं उपदेश को ।

तज के पृथ्वी को चढ़ा, प्यारे आकाश न तू कभी ॥२॥

माया छाया एक है, दोनों में सार की गम कहां ।

यह समझ आजाय होगा, फिर उदास न तू कभी ॥३॥

कैसे अपने रूप की, आती समझ प्यारे तुझे ।

आया वर्ष में पक्ष मास में, गुरु के पास न तू कभी ॥४॥

नाम से मिटते हैं संकट, नाम गुरु का मन्त्र है ।

नाम से काटा है माया, जाल फाँस न तू कभी ॥५॥

अब सँभल जा नाम में, विश्राम आठों याम ले।
कीया राधास्वामी नाम से,दुख का नाश न तू कभी ॥६॥

(६७)

ढूंढ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ।
मैं न काशी हूँ न मथुरा, मैं न गिरि कैलाश हूँ ॥१॥
तू हुआ मेरा तो मैं भी, देख तेरा हो गया।
कर भरोसा मेरा मैं ही, तेरी सच्ची आस हूँ ॥२॥
तेरे भीतर मेरी बैठक, आंख से ले देख अब।
मैं नहीं पृथ्वी की मूरत, मैं नहीं आकाश हूँ ॥३॥
किस भरम में है पड़ा, निर्भ्रान्त चित से शांत हो।
आप मैं हूँ योग युक्ती, आप शब्द अभ्यास हूँ ॥४॥
राधास्वामी नाम ले और, नाम में विश्राम ले।
सुख ले और आनन्द ले मुझ से मैं ही सुख राशि हूँ ॥५॥

(६८)

घट का घर सूना पड़ा है, इसमें आप आ जाइये।
दास हूँ सेवक हूँ सच्चा, अब तो आप अपनाइये ॥१॥
काम का मद मोह का, माया का कूड़ा हट गया।
शुद्ध निर्मल और सुथरी, कोठरी में आइये ॥२॥
घट का घर मेरा बने, मंदिर सुहाना अद्भुती।
मूरती आकर बिराजे, अपनी छबि दिखलाइये ॥३॥
मैं तुम्हारा तुम हो मेरे, यह समझ में आगया।

भर्म और अज्ञान माया, मोह का मिटवाइये ॥४॥
आरती साजूं जलाऊं, जोति भक्ती प्रेम की।
राधास्वामी नाद घँटा, शंख का सुनवाइये ॥४॥

(६६)

तारने वाले ने तारा, तर गये सब तर गये।
जिनको तरना था तरे, भव निधि के वह तट पर गये ॥१
लालची कामी तरे, क्रोधी तरे मोही तरे।
नीची योनी में जो वह थे, नाम ले ऊपर गये ॥१
तारने वाले ने तारा, तार तरने का बँधा।
अब हो क्या चिन्ता किसी को, उसके जो दर पर गये ।.३
आये शरनागत जो उसके, कर लिया जीवन सुफल।
अब नहीं तरने में संशय, काम अपना कर गये ॥४
राधास्वामी ने दया की, लाये नौका शब्द की।
जो चढ़े वह तर गये, चूके जो वह सब मर गये ॥५

(१००)

भव सागर अगम अथाह से पार, करा दिया सतगुरु दाता ने।
मुझ दीन अधीन को ठौर ठिकाने, लगा दिया सतगुरु दाता ने ॥
संसार महा दुख दायी था नहिं अपना कोई सहाई था।
निज दया से मेरा बिगड़ा काम, बना दिया सतगुरु दाता ने ॥
मन चंचल था अज्ञानी था, अभिमानी मानी गुमानी था।
सुरत शब्द जोग विधि से निश्चल, करवा दिया सतगुरु दाता ने ॥

घट अघट का भेद दिया मुझको, चरणों में अपने लिया मुझको।
सतसङ्ग के अमृत बचन सुना के, चिता दिया सतगुरु दाता ने ॥
मैं अब चरणों की बनी दासी, सुख पाकर होगई सुख रासी।
राधास्वामी धाम का देके पता, पहुँचा दिया सतगुरु दाता ने ॥

(१०१)

डंके की चोट सुनी घट में, मेरी सुरत सखी मतवारी बनी।
रण भूमि में काल करम के पग धर, लड़ने की अधिकारी बनी ॥४
जो धनुष बाण से लड़ते हैं, वह सच्चे वीर कहाँ सजनी।
इसलिए सुरत मेरी भक्ति पंथ में, आकर उपकारी बनी ॥२
मद मोह मान को विजय किया, माया ठगनी को मार दिया।
मन में नहिं किंचित डाह द्वेष, सतगुरु प्यारे की प्यारी बनी॥३
गढ़ अहंकार का तोड़ दिया, और कर्म का मटका फोड़ दिया।
सतगुरु से नाता जोड़ दिया, नहिं भूले भी संसारी बनी ॥४
राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी नित गाती हूँ।
अब राधास्वामी नाम दान की, सच्ची आज भिखारी बनी ॥५

(१०२)

उठ जाग सवेरा री–सुरत मेरी भागवती।
मिटा भर्म अँधेरा री–धार ले हिय सुमती ॥
क्या तू सोई मोह नींद में, उठ के भजन में लाग।
सोये होइ अकाज प्यारी, जाग जाग उठ जाग ॥१॥
चेत चेत है चेत का औसर, काल है फनधर नाग।

कब डसले क्या कोई जाने जाग जाग उठ जाग ॥२॥
प्रेम प्रीति परतीत उमंग से, धर गुरु पद अनुराग।
जो सोया सो खोया प्राणी, जाग जाग उठ जाग ॥३॥
शीतल मंद सुगंध पवन बहे, गा गुरु मंगल राग।
यह सोने का समय नहीं है,जाग जाग उठ जाग ॥४॥
राधास्वामी आये तोहि चितावन,बख़्शा अचल सोहाग।
तज आलस परमाद की निद्रा,जाग जाग उठ जाग ॥५॥

(१०३)

रंग दे मन की साड़ी रंगीले।
जनम जनम की मैली साड़ी।
मैल बोझ से भारी रंगीले ॥ रंग दे०
काम क्रोध कीचड़ में लतपत।
हो गई फूहड़ नारी रंगीले ॥ रंग दे०
सतसंग शिला ज्ञान का साबुन।
मल मल धो साड़ी कारी रंगीले ॥ रंग दे०
प्रेम का रंग सुहाना लगादे।
अब न फिरूँ मारी मारी रंगीले। रंग दे०
राधास्वामी प्रीतम अंग लगाले।
तेरी हो जाऊँ प्यारी रंगीले। रंग दे०

(१०४)

सांईं मेरी नैया लगादो पार (टेक)

टूटी नैया, रात अँधेरी, सूझै वार न पार।
बरसै मेंह अखंडित धारा, झर झर बहै बयार, ॥१
तुम खेवटिया चतुर सयाने, तुम जग के करतार।
जन हितकारी नाम तुम्हारा, दानी पुरुष अपार ॥२
तुम दयाल, तुम समरथ दाता, तुम सबके आधार।
तुम्हरे देखत भव जल डूबूं, अब तो करो उधार ॥३
गहरी नदिया, भँवर में नैया, डूब रही मंझधार।
अब तो लाज तुम्हें है मेरी, कर दो आज किनार ॥४
संग न साथी कोई मेरा, कोई नहिं हितकार।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी,टेरत तुमहिं पुकार ॥५

(१०५)

सहज में भव पार कर दो, नाव है मंझधार में।
है तुम्हारे हाथ रचा, हूँ दुखी संसार में ॥१॥
शब्द साखी क्या सुनूं मैं, सुनते जी अब भर गया।
मुझ को जीता तुम न समझो जीते जी मैं मर गया ॥२॥
तुम ने मेरी बांह पकड़ी अब तुम्हीं को लाज है।
राधास्वामी सतगुरू मेरे,अटका मेरा काज है ॥३॥

(१०६)

दयामय, दीन दुख भंजन, कृपानिधि भक्त मन रंजन।
कमल पद की शरन दीजे,पतित की लाज रख लीजे ॥१॥
जगत में कष्ट बहु पाया, चरन में आप के आया।

विकल मन चित्त घबराया, तुम्हारा ध्यान तब आया ॥२॥
चरन की ओट में लीजे, अटल भक्ती का बर दीजे।
भिकारी आप के द्वारे, पड़ा है ताप के मारे ॥३॥
पिला दो प्रेम का प्याला, रहै दिन रात मतवाला।
करम के जाल से भागे, अमी रस नाम में पागे ॥४॥
यही मन में है अभिलाषा, करो पूरी प्रभू आसा।
विनय राधास्वामी हितकारी, सुनो भव से करो पारी ॥५॥

(१०७)

कांटा लगा विरह का हिय में मेरा सिसक सिसक दम जाय।
१–जल बिन मछली चैन न पावे तड़पे और अकुलाय ॥
२–स्वांति बूंद बिन पपीहा तरसे पी पी रटन लगाय।
३–कमल की चाह में रसीया भौंरा घुमर घुमर मंडलाय ॥
४–तैसी दशा है मेरी सजनी मैं क्या करूं उपाय।
५–पिया बिन हिया जिया मेरा तड़पे छिन भर चैन न पाय ॥
६–विरह अग्नि की ज्वाला भड़की तन मन सब सुलगाय।
७–पिया मिले तो पीर बुझे यह प्रेम की औषधि लाय।
८–जगत अंधेरा दृष्टि में मेरे पिया बिन कोई न सुहाय।
९–राधास्वामी महर करें जब तब बिगड़ी बन जाय ॥

(१०८)

सजनी चलो बाग़ में पीके आई सावन की बहार।
१–हरी भरी क्यारी लगे सुहावन फूले फूल अपार ॥

२—कहीं जूही कहीं बेला चम्पा कहीं केतकी अनार ।
३—कमल खिले भौंरा मँडलाने बिगसे हर सिंगार ॥
४—पिया के गले प्रेम से डालो गुथ गुथ फूल के हार ।
५—बरसे मेह अखण्डित धारा चहुँ दिस बहे बयार ॥
६—काली काली घटा गगन में छाईं सूझे वार न पार ।
७—रह रह कर नभ चमके बिजली भीनी २ नभ बरसे फुहार ॥
८—उमड़ उमड़ कर सब बह निकले सागर नद नदी नार ।
९—विरह तपन की आग बुझाओ कर पी का दीदार ॥
१०—भाग जगे औसर शुभ पाया यह नहीं बारम्बार ।
११—घूमर घूमर राधास्वामी परिक्रमा गाओ शब्द मलार ॥

(१०९)

संतो सहज समाध भली ।
जबते कृपा भई सतगुरु की सुरत न अंत चली ॥
१—आंख न मूंदूं कान न रूँदूं काया कष्ट न धारूँ ।
खुले नयन मैं हँस हँस देखूं सुन्दर रूप निहारूँ ॥१॥
२—जहां जहां डोलूँ सोई परिक्रमा काम करूँ सो पूजा ।
ग्रह उद्यान एक सम लेखूं भाव मिटाऊँ दूजा ॥२॥
३—कहूँ सो नाम सुनूं सोई श्रवन खाऊँ पीऊँ सो सेवा ।
जब सोऊँ तब करूँ दण्डवत पूजूं और न देवा ॥३॥
४—शब्द निरन्तर मनुआं राता मलिन बासना त्यागी ।
सोवत जागत कबहु न बिसरे ऐसी तारी लागी ॥४॥

शब्द संग्रह भाग २
राजभक्तिनी मीराबाई
राजभक्त गोपीचंद, पुराना
आदर्शभारती महिलायें ।।।)
मिलने का पता—
...र—शिव दयाल नगर (अलीगढ़)

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL